सफलता के आठ वर्ष

वर्ष 8, अंक 02 इलाहाबाद नवंबर 2008

विश्व स्नेहसमाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत5 रुपये

चार कहॉनिया

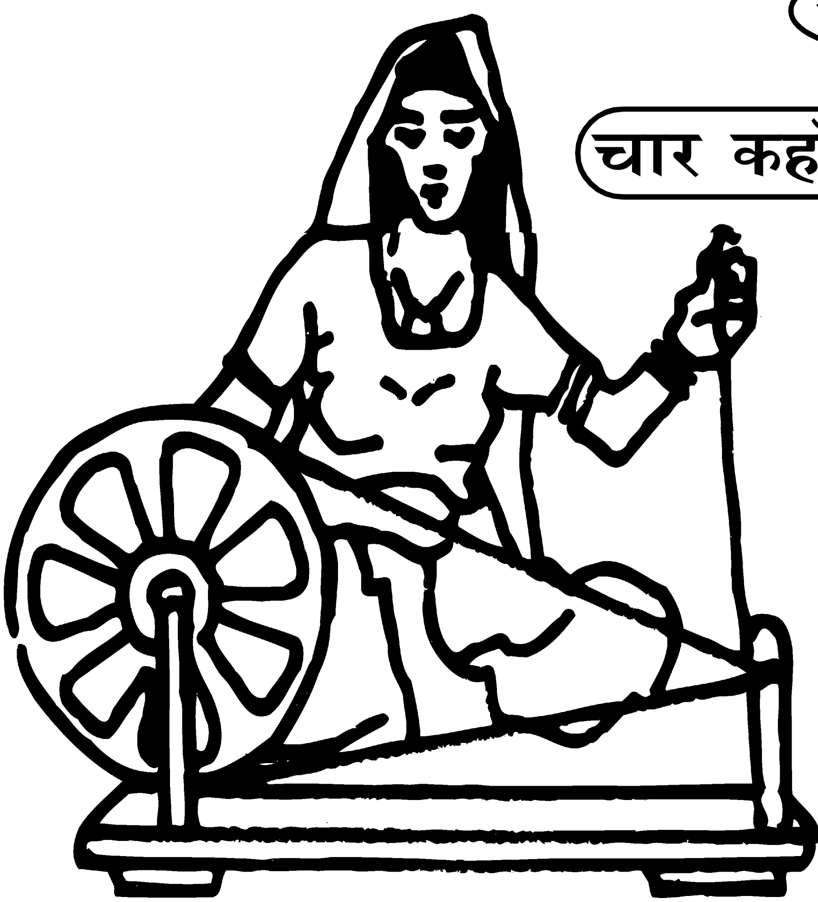

निकम्मा साहित्य लिखने वालों को ऊँचा दर्जा दिया जा रहा है

मादाम पर माण्डा का जादू!

इफको

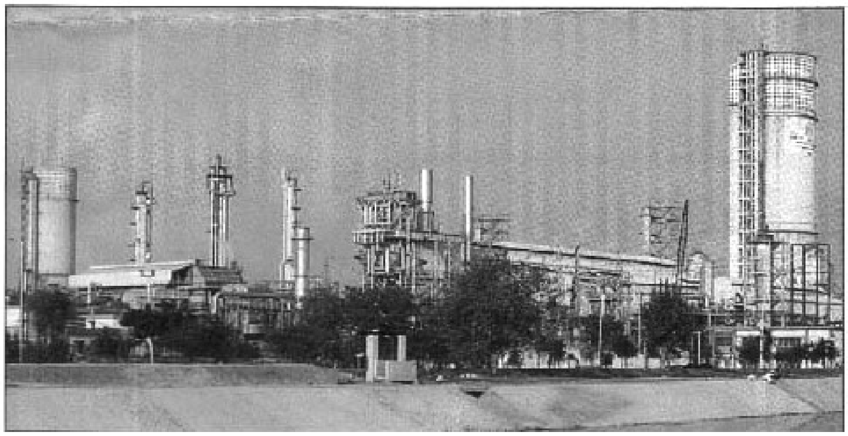

- नाइट्रोजिनस एवं फास्फोरिक उर्वरकों के उत्पादन एवं विपणन के क्षेत्र में विश्व की अग्रणी संस्था बन कर उभरी।
- ग्रामीण समुदाय की सेवा की दृष्टि से इफको–टोकियो जनरल इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड की स्थापना।
- एक संयुक्त विशाल उर्वरक परियोजना **'ओम इफको'** की कमीशनिंग ओमान में जुलाई 2005 में सफलतापूर्वक पूरी की गयी तथा निरंतर उत्पादन जारी है।
- पारादीप उड़ीसा में इफको ने फास्फोरिक एसिड संयंत्र के साथ विश्व की विशालतम (19.2 लाख टन क्षमता) डीएपी एवं एनपीके काम्पलेक्स का अधिग्रहण किया एवं इस समय पूर्ण उत्पादन क्षमता में है।
- एक विशाल पावर परियोजना इफको छत्तीसगढ़ पावर प्रोजेक्ट आई सी पी एल छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर जिलें में रु0 4500 करोड़ की लागत से आरम्भ किया जा रहा है।
- आंध्रप्रदेश के नेल्लूर में इफको **किसान विशेष आर्थिक क्षेत्र SEZ** की स्थापना करने जा रही है। जिसके लिए वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार ने पहले ही स्वीकृति दे दी है। किसानों की सेवा के लिए बहु आयामी किसान सेज कार्यक्रम में पहले फूड प्रोसेसिंग एवं कृषि आधारित उद्योगों को अपनाया जाएगा।
- जोर्डन के इसीदिया माइन्स में फास्फोरिक एसिड संयंत्र लगाने के लिए जार्डन फोस्फेट माइन्स कम्पनी के साथ संयुक्त उद्यम के लिए इफको ने एग्रीमेंन्ट किया है, इससे किसानों को डीएपी/एनपीके के आपूर्ति में मदद होगी।
- उर्वरक क्षेत्र में प्राप्त की गई उपलब्धियों के लिए उर्जा संवर्धन दिवस 4 दिसम्बर 2007 को नई दिल्ली में ब्यूरो आफ इनर्जी एफीसिएन्सी विद्युत मंत्रालय भारत सरकार से राष्ट्रीय उर्जा संवर्धन का **प्रथम पुरस्कार** इफको फूलपुर इकाई–। एवं **द्वितीय पुरस्कार** इफको फूलपुर ईकाई–।। को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया।
- इफको फूलपुर इकाई–। ने नाइट्रोजिनस उर्वरक क्षेत्र में फर्टिलाइजर एसोसिएशन आफ इन्डिया से समग्र श्रेष्ठ उत्पादन निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। यह अवार्ड माननीय केन्द्रीय उर्वरक एंव रसायन मंत्री ने 05 दिसम्बर 2007 को नई दिल्ली में प्रदान किया था।

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

फूलपुर इकाई, पोस्ट–घियानगर, जिला–इलाहाबाद–212404

फोन (05332)251334, 251250, 251251, (0532)2609213

फैक्स (05332)251332, 251253 ई–मेल **phulpur@iffco.nic.in** **Website- www.iffco.nic.in**

विकास का योग इफको उर्वरक का प्रयोग

बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता का बहिष्कार करना चाहिए

आज कल सरकारें तत्कालीन चुनावी फायदें के लिए चुनाव का समय नजदीक आते हीं लोकलुभावन घोषणाओं की बाढ़ लगा देती हैं. यह किसी एक राज्य की बात नहीं बल्कि लगभग सभी राज्यों में ऐसा होता है चाहें वह किसी भी पार्टी की सरकार हों. अपने उत्तर प्रदेश में भी कन्या विद्याधन, साड़ी वितरण, बेरोजगारी भत्ता, अर्द्धकुम्भ में आटा इत्यादि लोकलुभावन घोषणाओं का दौर लगातार जारी हैं. एक बेरोजगार जो स्नातक हों तथा उसकी उम्र ३५ वर्ष से कम हो को प्रत्येक माह रु० ५००/-देनें का प्रावि‍धान हैं. इस प्रकार दिन के हिसाब से १६.६७ रुपयें प्रतिदिन बनता हैं. अगर हम यह मान लें कि एक बेरोजगार कुंवारा है, उसके ऊपर कोई आश्रित नहीं है तो वर्तमान दर से आलू १४-१८ प्रति किग्रा., गेंहूं १२-१५प्रति किग्रा., दाल ३५-५०रु० प्रति किग्रा., बैगन ८-१० प्रति किग्रा. टमाटर १२-२० प्रति किग्रा. के हिसाब से बाजार में बिक रहा हैं. अगर बेरोजगार एक समय २५०ग्रा० आटा, १००ग्रा. आलू, ५०ग्राम दाल, १०० ग्रा. बैंगन, ५०ग्राम टमाटर एक समय खाता है तो (३.७५+१.८०+२.२५+१.००+०.८०) के हिसाब से ६.६० पैसे केवल भोजन के आते हैं यानी दोनों समय केवल साधारण भोजन करें तो १९.२० प्रतिदिन बैठता हैं. ऐसे बेरोजगारी भत्तें से क्या फायदा जो एक आदमी केवल पेट तक न पाल सकें. व्यवहार में यह देखा गया कि बेरोजगारों की श्रेणी में ऐसी अधिकतर महिलाएं शामिल हैं जिनके पति या तो सरकारी सर्विस में हैं या प्राईवेट सर्विस में ही पर्याप्त धन अर्जित कर रहे हैं. अगर इस भत्ते के बदले प्रदेश में बंद पड़ी चीनी मिलों व अन्य उद्योगों को चालू किया जाता, नये उद्योग लगाये जाते. किसी भी तरह से एक दो लाख रोजगार के साधन सृजन किए जाते तो वह ज्यादें श्रेयष्कर होता. अगर ऐसा नहीं होता है तो भी बेरोजगारों को लघु उद्योगों को लगाने के लिए सहायता दी जाए तो भी काफी हद बेरोजगारी स्थायी रुप से दूर हो सकती हैं. आकड़ें में पाया गया कि अगर पूरे प्रदेश में २ करोड़ बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता दिया जा रहा हैं तो १० अरब रुपयें प्रत्येक माह खर्च हो रहे हैं यानी साला १ खरब बीस अरब रुपयें, और एक बेरोजगारी भत्ता बांटने के एक कार्यक्रम में अगर तीस लाख रुपयें खर्च हो रहे हैं और पूरे प्रदेश में कम से कम तीस जगह कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है तो एक करोड़ पचास लाख रुपये खर्च होगें. इस प्रकार प्रत्येक माह कुल खर्च हो जाता है १० अरब १ करोड़ ५० लाख रुपये. अगर इन पैसो से बेरोजगारों को लघु उद्योग के लिए लोन दिया जाता है तो १० हजार एक सौ पचास लघु उद्योग प्रत्येक माह खुलेगें. अगर प्रत्येक लघु उद्योग से १० लोगों को रोजगार मिलता है तो प्रत्येक माह दस लाख पन्द्रह सौ लोगों को रोजगार मिलेगा जिसमें कम से कम एक बेरोजगार १५००- २०००/ रु० प्रति माह कमा सकता हैं. अगर इस पैसे को वार्षिक स्तर पर निकाले तो १२ लाख १८ सौ नये लघु उद्योग खुलेंगें यानी सालाना एक करोड़ बीस लाख १८ हजार लोगों को रोजगार मिल जाएगा.

अगर उपरोक्त आकड़ें पर गौर करें तो यह लगता है कि वास्तव मे बेरोजगारों को द्विगभ्रमित करने का यह सस्ता/हल्का चुनावी हथकड़डें के सिवा कुछ नहीं हैं. इसी प्रकार गरीब महिलाओं को साड़ी बॉटनें का प्राविधान किया गया हैं जिसमें अगर पूरे प्रदेश में २ करोड़ महिलाओं को दो-दो साड़ी बांटने की योजना हैं अगर एक साड़ी दो सौ रुपये की पड़ती हैं तो ८ अरब रुपयें खर्च आएंगे कार्यक्रम का खर्च अलग होगा. २ करोड़ गरीब महिलाओं को साड़ी बॉटनें के बजाय अगर यह पैसा एक लाख रुपयें की दर से ८० हजार महिलाओं को दिये जाएं तो प्रदेश में आठ लाख गरीब महिलाओं को रोजगार मिलेगा.

उपरोक्त आकड़ें से हमारे प्रदेश के बेरोजगार बंधु जो इस पैसे को पाकर फुले नहीं समा रहे हैं, गरीब महिलाएं इस बात पर इतरा रही है कि उन्हें साड़ी मिलेगी. उन्हें समझ में आ जाएगा कि यह एक चुनावी हथकड्डा मात्र हैं. बेरोजगार बंधुओं को चाहिए कि वे इस भत्तें का विरोध करें. उन्हें व महिलाओं को चाहिए कि वे सरकार से यह मांग करे कि हमें भत्ता साड़ी नहीं बल्कि रोजगार चाहिए.

(गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी)

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

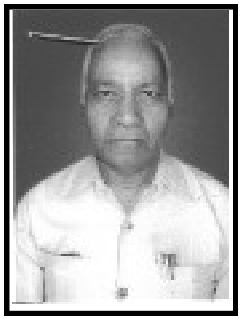

हेम चन्द्र श्रीवास्तव

उपाध्यक्ष, उ.प्र.
अखिल भारतीय राजीव गॉधी बिग्रेड एवं
सदस्य-जिला अपराध निरोधक समिति, इलाहाबाद
आवासः ५/७-८२६, शिवकुटी, इलाहाबाद
मो.: ६३३५१६३२६०,9936678180

Reco. By. U.P.Government

With Complement From :

Kishore Girls Inter College & Convent School

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Manager
V.N.Sahu

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar,
G.T. Road, Allahabad

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

श्रीमती सोशन एलिजाबेथ

महासचिव/समाज सेवी
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड
(अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद
मो0:9415347555

पत्रिका के समस्त पाठकों को हार्दिक बधाई

रेवा नन्दन द्विवेदी

(सिविल इंजीनियर)संयुक्त सचिव
द स्कूल होम फॉर द ब्लाइण्ड
(अंधा खाना, नैनी)
नैनी सेण्ट्रल जेल के पास, जेल रोड पावर हाउस, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद, मो0:9415347555

विश्व स्नेह समाज
yksdfiz; fgUnh lkekftd ekfld if=dk
uoacj 08
iz/kku lEiknd
xksdqys'oj dqekj f}osnh

lEikndh; dk;kZy;%

,y-vkbZ-th&93] uhe ljk;
dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn
dkukQqlh% 09335155949
bZ&esy%vsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

vko';d lwpuk%

if=dk esa izdkf'kr fdlh Hkh jpuk ds fy, ys[kd Lo;a ftEesnkj gksxkA if=dk ifjokj] izdk'kd ;k laiknd dk blls dksbZ ysuk nsuk ugha gksxkA fookn ds lanHkZ esa U;k;ky; {ks= bykgkckn gksxkA

vUnj if<+,

मादाम पर माण्डा का जादू–8,
प्रमोद महाजन की हत्या–9,
साहित्यिक प्रदूषण के गुनहगार–10,
सपनों की हकीकतः २१
स्थायी स्तम्भः
स्नेह बाल मंच–13
व्यक्तित्व–14
कहानी–15, 26
व्यंग्य–16,
आध्यात्मः 18,
कैरियर–20,
स्वास्थ्य–22
साहित्य समाचार – 23
कविताएं –25,
ज्योतिष –27,
इधर उधर की : 28,
हंसगुल्ले–29,
समीक्षाः 30,

चिट्ठी आई है

एक अनुभवी संपादक का अथक प्रयास है पत्रिका

आदरणीय द्विवेदी जी,
नमस्कार

समस्त विश्व को बांध सके जो,
स्नेह पाश में आज।
प्रयासरत उस लक्ष्य हेतु ही,
विश्व स्नेह समाज।।

अप्रैल- का अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका हर दृष्टिकोण से परिपूर्ण है और एक अनुभवी संपादक के अथक प्रयास का सुन्दर परिणाम हैं. अतः मन में जो विचार आये उन्हें दो पक्तियों में प्रकट किया है. पृष्ठ ६ में बवासीर की दवा का सूचनात्मक विज्ञापन देकर आपने परोपकार का कार्य किया है. मुझे पत्र देने वाले हर भाई को मैं दवा मुफ्त भेजता हूँ.

शुभकामनाओं के साथ
वी. नारायण स्वामी, चेन्नई

◂◂◂◂◂◂◂◂◂

आप और विश्व स्नेह समाज दोनों ही यशस्वी हों

आदरणीय पंडित जी, चरण स्पर्श।

संयोग से पिछले दिनों आपके कुशल संपादकत्व में प्रकाशित विश्व स्नेह समाज का एक अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका का अधिकांश सामग्री अत्यंत मनोयोग से पढ़ गया. संकलित कवितॉए, कहानियॉ आदि तमाम सामग्री, समसामयिक एवं विचारोत्तेजक है. आप और विश्व स्नेह समाज दोनों ही यशस्वी हों यही मेरी शुभकामनाएं.

धन्याबाद भवदीय
बैजनाथ शर्मा 'मिण्टू', अहमदाबाद

◂◂◂◂◂◂◂◂◂

पत्रिका की लगभग सभी रचनाएं अच्छी लगी.

समादरणीय द्विवेदीजी,
सप्रेम अभिवादन

पत्रिका का जून, अंक मिला. सभी रचनाएं अच्छी हैं. पत्रिका की लगभग सभी रचनाएं अच्छी हैं. हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध नगरी 'मण्डी' के विषय में 'माण्डव्य से शिक्षा' विषयक लेख से विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई. ऐसे ज्ञानवर्धक लेख के लिए बधाई. बाल साहित्य से संबंधित 'बन्दर' कविता मनोरंजक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं. आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द होगें.

आदर सहित
डॉ० विनय कुमार मालवीय, इलाहाबाद

◂◂◂◂◂◂◂◂◂

संपादन प्रशस्य है

आदरणीय,

पत्रिका का अंक मिला. साहित्य मेला-समाचार भी. यह एक स्तरीय पत्रिका है. कविताएं रुचिकर हैं. जून के अंक में हमारा समाज लेख अच्छा हैं. वैद्यनाथ धाम का परिचय एवं इतिहास, सूचनाधर्मी है. पत्रिका के प्रारम्भ में राजनीतिक सूचनाएं ध्यानाकर्षक है. संपादन प्रशस्य है.

डॉ. स्वर्ण किरण,
संपादक नालंदा दर्पण, सोहसराय, नालंदा.

◂◂◂◂◂◂◂◂

बाल यौन उत्पीड़न का मुख्य कारण पहनावा ही है

आदरणीय द्विवेदी जी,

सप्रेम अभिवादन. पत्रिका का जून अंक मिला धन्यबाद. सम्पादकीय में व्यक्त आपके विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूँ. बाल यौन उत्पीड़न का मुख्य कारण पहनावा ही हैं. मां-बाप भी फैशन में इस तरह डूब गए है कि अपने बच्चों के अनाप-शनाप पहनावे को आधुनिकता समझ रहे हैं. यह कदापि उचित नहीं हैं. मां-बाप को चाहिए कि वे अपने बच्चियों को इस आधुनिकता के दौड़ में शामिल करने के लिए उनके भविष्य से खिलवाड़ न करें और उनके पहनावें पर ध्यान रखें.

कैलाश त्रिपाठी का आलेख 'पत्रिकायें और

चिट्ठी आई है

हमारा समाज' विचारणीय हैं. वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' का व्यंग्य 'अथ नेता महात्म', डॉ० मदन मोहन वर्मा की कहानी 'यर्थाथ बोध', जीवित राम सेतपाल की लघुकथा 'क्रिकेट' पठनीय हैं. कुन्दन कुमार खवाड़ें का आलेख 'वैद्यनाथ धाम का परिचय एवं इतिहास' ज्ञानबर्धक हैं.
हलीम आइना, प्रो० भगवत प्रसाद मिश्र, डॉ० विनय मालवीय तथा डॉ० मदन मोहन की पद्य रचनाएं भी पसंद आयी.
आशा है आप कुशल होगें.

आपका शुभचिंतक

अभय कुमार ओझा, खगड़िया, बिहार

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

इतने कम मूल्य में इतनी सुरुचिपूर्ण पत्रिका निकालना एक सराहनीय कार्य है, आदरणीय सम्पादक द्विवेदी जी, साहित्य नमन!
आशा है आप स्वस्थ सानन्द पूर्वक होंगें. आपके स्नेह कृपा द्वारा प्रेषित रा.हि. मासिक विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. आपने जो मुझे सम्मान प्रदान किया है इस हेतू मैं आपका सदा आभारी रहूंगा. इस पत्रिका के माध्यम से आप राष्ट्रीय भाषा हिंदी की जो निस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है. इतने कम मूल्य में इतनी सून्दर सुरुचिपूर्ण पत्रिका निकालना वास्तव में एक सराहनीय कार्य हैं पढ़कर आनन्दीत हुआ. अपने स्नेही जनों को इस पत्रिका से जोड़ने में पूर्ण सहयोग भी दूंगा.
शेष शुभ. आपका आज्ञाकारी

प्रेमसिंह चेतन

श्री रंग सोसायटी, पवई मुंबई

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

पत्रिका अच्छी लगी

माननीय सम्पादक जी,
सप्रेम नमस्ते, पत्रिका का अंक मिला. इस अंक में नया स्तम्भ भारती की महान विभूतियां बहुत अच्छा लगा. श्री मोहन द्विवेदी जी की कविता 'हम तो भारतवासी है' अच्छी लगी. श्री एस.बी.मुरकुटे जी का लेख 'मधुकरराव चौधरी' बहुत प्रेरक रहा. **राजीव कुमार 'हिन्दी पुत्र'**

बरेली, उ.प्र.

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

सादरं नतिः

समादरणीय द्विवेदी जी,

आपकी सम्पादक मनीषा से मण्डित 'विश्व स्नेह समाज का अंक प्राप्त कर आन्तरिक प्रसन्ना हुई. कागज और छपाई-सफाई के असौष्ठव के बावजूद यह पत्रिका अपनी सारस्वत सामग्री की सुष्ठुता से हृदय को आवर्जित करती हैं. आपके सम्पादकीय में भारत में लोकतंत्र की वर्तमान तथाकथित प्रशासकों द्वारा की जाने वाली दुर्गति पर बड़ी प्रखर और उत्तेजक टिप्पणी है. आपकी इस टिप्पणी से 'पत्रकार युग का प्रहरी होता है' यह बात सचमुच चरितार्थ हुई हैं.

डॉ०श्रीरंजन सूरिदेव, कंकड़बाग, पटना

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

अंक सग्रहणीय है

संपादक जी, फरवरी अंक मिला. पढ़ कर प्रसन्नता हुई. आद्यशंकराचार्य पर स्वामी विद्यानन्द सरस्वती महाराज का लेख पठनीय एवं प्रमाणिक हैं. रुद्राक्ष के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिली. पत्रिका में कई जीवनोपयोगी लेख मिलें. महत्वपूर्ण साहित्यिक सूचनाओं से अवगत हुआ. यह पत्रिका अध्यात्मक और साहित्य का संगम है. हिंदी के विकास में इसकी भूमिका असन्दिग्ध है. श्रद्धेय गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी को सफल संपादन के लिए कोटिशः बधाईया. विशेषतः डॉ० रामकुमार वर्मा के हास्य नाटक 'रुप की बीमारी' के लिए. पत्रिका का हर आलेख पठनीय है. अंक सग्रहणीय है.

डॉ० योगेश्वर प्रसाद सिहं, अध्यक्ष, पटना जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

सम्पादकीय में साफ-सुथरी बेबाक बात प्रभावित करती है

माननीय, सादर नमस्कार, अंक-३ मिला. सधन्यबाद. आभारी हूँ. पत्रिका पठनीय हैं. इसमें सभी कुछ है यथा गागर में सागर. आपकी सम्पादकीय में साफ-सुथरी बेबाक बात प्रभावित करती है. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा हिंदी साहित्य के प्रति आपका समर्पण भाव एवं उसके विकास में योगदान सराहनीय है. नीलम जी की ज्योति अकादमी के संबंध में लेख, ज्ञानेन्द्र साज की ग़ज़ले, डॉ. इन्दिरा अग्रवाल के मुक्तक तथा कहानी अच्छे लगे. साहित्य मेला- के कार्यक्रम गतिविधि ा पढ़ने से ज्ञात हुआ कि आपका साहित्यिक क्षेत्र में योगदान महत्वपूर्ण है, जबकि ऐसे आयोजन करना बड़ा कठिन होता है लेकिन सफलता पूर्वक सम्पन्न किया हार्दिक बधाई. सहयोग आकांक्षी शुभकामनाओं के साथ.

शिव डोयले, विदिशा, म.प्र.

....

पत्रिका के कागज में सूधार करें

पत्रिका का अंक मिला. पत्रिका में विविधता तो है और पठनीय एवं सामयिक सामग्रिया भी है परंतु मुद्रण बहुत अच्छी नहीं है और न तो कागज अच्छा है. इन दोनों में सुधार करें तो इसकी लोकप्रियता भी बढ़ेगी. धर्म, समाज, राजनीति तथा विज्ञान सबकी चर्चा प्रशंसनीय प्रयास हैं. चित्रों को और अधिक सुन्दर बनावें तो पाठक पंसद करेगा. पत्रिका के साहित्यिक महत्व को न घटायें. सादर

डॉ० राजेश्वरी शांडिल्य, लखनऊ

आदरणीय श्री द्विवेदी जी, सादर प्रणाम। आशा है सानंद है. पत्रिका का जून-अंक में मेरी लघु कथा 'मांए' छापने के लिए आपका धन्यबाद और आभार व्यक्त करता हूँ. भविष्य में भी प्यार देने में कोताही नहीं करेगें. सादर

आपका ही तो

डॉ. पूरन सिंह, नई दिल्ली

◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂ ◂◂

आप के प्रयास को मेरा नमन स्वीकार हो.

संपादक जी, सादर,

विश्व स्नेह समाज पत्रिका मिली. साहित्य के माध्यम से आप देश सेवा की अनूठी नजीर पेश कर रहे हैं. स्तरीय रचनाओं का चयन, सधी हुई प्रस्तुति आपके गंभीर व सटीक संपादन कौशल का परिचय देती है. थोड़ा सर्तक हो जायें तो पत्रिका में और अधिक सुधार हो सकता है. विविध विधाओं पर ज्ञानप्रद जानकारी पत्रिका को पारिवारिक व संग्रहणीय बनाती है. आप के प्रयास को मेरा नमन स्वीकार हो.

शब्बन खान 'गुल', लखनऊ

अपने नाम और उद्देश्य अनुरुप कार्य कर रही है पत्रिका

सेवा में, परम आदरणीय संपादक महोदय, आपको मेरा स्नेहिल दिली मुबारकबाद. आप द्वारा संप्रेषित अंक ६ मिला. आपने नाम और उद्देश्य के अनुरुप पत्रिका अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वाह में सफलतापूर्वक कदम बढ़ा रही है. नवोदित रचनाकारों के प्रोत्साहन के लिए पत्रिका परिवार द्वारा किये जा रहे प्रयास सराहनीय है. इसमें कोई संदेह नहीं कि पत्रिका में हर सम्भव प्रत्येक क्षेत्र तथा वर्ग के पाठकों का ध्यान रक्खा गया है. यदि इसमें लेखन की विभिन्न विधाओं के बारे में एक स्तम्भ हो तो नये रचनाकारों को कविता, कहॉनी, एकांकी, नज्म, गज़ल तथा निबंध आदि जैसी विधाओं की विशेषताओं का ज्ञान आसानी से प्राप्त हो सकेगा. यद्यपि आप जापानी भाषा के बारे में एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जो कि एक सराहनीय पहल है. इस उम्मीद और आशा के साथ की पत्रिका मातृभाषा हिंदी के साथ फूलती फलती रहेगी तथा जनमानस की आवाज बनकर एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगी. पत्रिका परिवार को ढेर सारी शुभकामनाएँ. साहित्य प्रेमी.

अवधेश कुमार मौर्य, इलाहाबाद

श्रीमान सम्पादक महोदय, नमस्कार

पत्रिका का अंक मिला. रुद्राक्ष के बारे में अच्छी जानकारी मिली. लेकिन कहना गलत है कि रुद्राक्ष ताम्बें के सिक्कों पर नहीं घूमता है. करीब दस साल पहले मैंने ऐसा करके देखा था व रुद्राक्ष की गति आश्चर्यजनक थी. सिक्कों को ऊपर नीचे दो प्लेटों की भांति लगाकर उसे हल्का सा दबाये रुदाक्ष घूम नहीं पाता है. पत्रिका की सामग्री अच्छी हैं.

वीरेन्द्र गोयल,

मान्यवर,

सादर नमस्कार,

पत्रिका का नया अंक मिला. पत्रिका में हर वर्ग के पाठकों की रुचि को देखते हुए सामग्री दी गई हैं. अच्छा लगा. कृपया एक या दो पेज बच्चों के लिए भी निधारित करने की कृपा करें. स्नेहाकांक्षी,

इनके भी पत्र मिले-

१.हेमन्त कुमार बिनवाल, उत्तराचंल
२.राजकुमार वर्मा, मोतिहारी, बिहार
३.रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, इलाहाबाद
४.देवेन्द्र कुमार मिश्र, छिन्दवाड़ा
५.कमलकिशोर ताम्रकार, रायगढ़, छत्तीसगढ़
६.कृष्ण सौमित्र, बहादुरगढ़, हरियाणा
७.रामगोपाल शर्मा, मन्दसौर, म.प्र.

सम्मानित पाठकों,

आपके पत्र हमें हमेशा मिलते रहते हैं. आपके पत्रों में शिकायत एवं सुझाव भी शामिल हो तो हमें अच्छा लगेगा.संपादक

आपको यह हमारा विशेषांक कैसा लगा? इस अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराते रहें.

संपादक

दोहा -दीप्ति

गोकुलेश जो है वहीं गोकुलेश का दास
जो गो-कुल का दास है, पाता जगदुपहास।।
कृपा करें तो छीन कुछ लेता है भगवान।
इसकी अटपट-सी कृपा सहते संत सुजान।।
हम तो मानेंगे नहीं, बनो तो बन लो बीर।
अब तक न छुड़ा सके नहीं पाक-अधिकृत कशमीर।।
आज ठीक होगा नहीं शुद्ध सधुवई स्वॉग।
शास्त्र-शस्त्र धारी उभय, यही समय की मांग।
ऐसा बॉका रुप तुम पाये हो नंदलाल।।
जो देखे दीवानगी पा जाये तत्काल।।
तेरी किसे न मोहनी खरी सॉवली आब।
होता काले रंग का सुन्दर क्या न गुलाब?
छलक-छलक करके हुआ अचलक दृग-उपकार।
अंग-अंग गोविन्द के यों ही अकथ अनूप।
नृत्यकला से लग गया गगन सातवें रुप।
मेरा मन आराम में, मेरे मन आ राम।।
रामनाम जपना मुझे, सुबह, दोपहर शाम।।
दिन-निशि चलती सॉस है बार इक्कीस हजार।
राम मंत्र इतना जपों, घंटें लगने चार।।
जुट कर जपिये रातदिन, यही आपका काम।
अनरस, रस, अति रस पुनः देता भगवन्नाम।।
'क' कमलोदुभव, 'श' शिव है, विष्णु व प्रकट त्रिदेव।
व्यापा विधि शिव विष्णु में केशव परमात्मैडव।।
आदि कटे जीवन रहित, अंत कटे तो बाल।
बूझों तो कल्याण है, गाल अन्यथा लाल।
केशव तेरे प्यार का पारावार अपार।
पार लगे तो पार है, डूबे वे भी पार।।
बेला आयी सहशधित हुए यशोमति जात।
हरि उत्तर-दक्षिणध्रुवी, करो आज की रात।।

डॉ. राजेश दयालु, लखनऊ

मादाम पर माण्डा का जादू!

✍द मॉरल

राजा नहीं फकीर है देश की तकदीर है' का नारा लगवाकर दिल्ली का ताजोतख्त संभालने वाले राजा माण्डा यानी पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी.सिंह की राजनीतिक कलाबाजियों से जहां श्री मुलायम सिंह यादव व सुश्री मायावती बुरी तरह खफा हैं वहीं कांग्रेस आलाकमान श्रीमती सोनिया गांधी उन पर लट्टू हैं.

राजनीतिक सूत्रों का कहना है कि राजनीति के माहिर खिलाड़ी श्री वी.पी.सिंह की लाइफ लाइन पटरी पर दौड़ रही हैं. कितनी विचित्र बात है कि जिस वी.पी.सिंह ने स्व० राजीव गांधी को बोफोर्स का गोला दागकर सत्ताच्यूत कर दिया था उन्हीं की धर्मपत्नी श्रीमती गांधी उन पर इस कदर विश्वास करने लगी है कि निकट भविष्य में यदि वी.पी.सिंह के जनमोर्चे से कांग्रेस हाथ मिला ले तो अनहोनी न होगी. यदि सब कुछ ठीकठाक चलता रहा तो वी.पी. कल के जयप्रकाश नारायण भी बन सकते हैं यानी उनकी धुरी पर कांग्रेस, छोटे चौधरी श्री अजित सिंह, राजद सुप्रीमों श्री लालू प्रसाद यादव और वाममोर्चा चक्रवत नाचेंगें. यदि कालान्तर में वह राजग में फूट डालकर जद(यू) को भी अपने पाले में खींच लाये तो बड़ी बात न होगी.

कहा जा रहा है कि मादाम सोनिया गांधी राजा माण्डा से इसलिए प्रभावित है कि वह उनके जानी दुश्मन श्री मुलायम सिंह को पूरी तरह निपटानें पर तुले हुए है. यही नहीं वह तो कांग्रेस के दलित वोटों के बल पर राजनीति करने वाली बसपा सुप्रीमों सुश्री मायावती की राजनीति भी चौपट करने पर आमदा हैं. कौन नहीं जानता कि यदि राजा माण्डा के मोर्चे में मुलायम, अमर विरोधी दिग्गजों की जमात है तो बसपा सुप्रीमों विरोधियों की कमी नही हैं. इंडिया जस्टिस पार्टी के श्री उदयराज व लोक जनशक्ति पार्टी के श्री रामविलास पासवान का उद्देश्य भला कौन नहीं जानता और आज की तारीख में ये दोनों राजा माण्डा के विश्वस्त साथी हैं.

> ☼पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी.सिंह की राजनीतिक कलाबाजियों से जहां श्री मुलायम सिंह यादव व सुश्री मायावती बुरी तरह खफा हैं वहीं कांग्रेस आलाकमान श्रीमती सोनिया गांधी उन पर लट्टू हैं.
>
> ☼इंडिया जस्टिस पार्टी के श्री उदयराज व लोक जनशक्ति पार्टी के श्री रामविलास पासवान का उद्देश्य भला कौन नहीं जानता

सूत्रों का कहना है कि सपा सुप्रीमों वस्तुस्थिति से अंजान नहीं है तभी तो वह अब खुलकर राजा माण्डा पर हमला बोलने लगे हैं. वी.पी.सिंह की वजह से ही उनकी राजनीतिक हैसियत सिमटती जा रही हैं. और कल के साथी निरन्तर दूर होते चले जा रहे हैं. सूत्रों ने स्मरण कराया कि तीन साल पहले २६ अगस्त २००३ को जब श्री मुलायम सिंह ने शपथ ली थी तो सभी ने उनका अभिनंदन किया था. भाजपा ने परोक्ष मदद कर सरकार बनवाई थी वही श्री सीताराम येचुरी से लेकर श्री जार्ज फर्नाडीस आदि उनके शपथ समारोह में शरीक हुए थे. लेकिन पिछले महीनें जब उन्होंने तीसरी वर्षगांठ मनाई तब वे अकेले थे. तभी से समाजवादी पार्टी के नेता यह प्रचार करते फिर रहे हैं कि जिस वी.पी.के लिए कभी नारा लगता था राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है, उसी फकीरके बेटे ने इलाहाबाद में करोड़ों का माल कहां से बना लिया? वह अपनी जनता को अमरीकी मेकडॅानाल्ट कंपनी का बर्गर खिलवा रहा है. सचमुच सपा नेताओं ने वी.पी.सिंह के परिवार को राजनीति में घसीट लिया हैं. उधर सुश्री मायावती को गिला है कि श्री वी.पी.सिंह जस्टिस पार्टी के श्री उदितराज को लेकर साथ घूम रहे हैं. सो वे भी इन दिनों श्री वी.पी. सिंह को लेकर सभाओं में कह रही है यह गांधी बनने चला था. जब प्रधानमंत्री था तब किसानों की याद नहीं आई. अब किसानों का मुद्दा उठा रहा है, कांग्रेस इसे राजनीति के कबाड़ से उठाकर लाई है जो ढोंग करता हैं. राजबब्बर के बारे मे मायावती का कहना है होता है, इसे चिकना-चुपड़ा चेहरा होने की वजह से भीड़ देखने आती है. भाषण देते हुए यह नौटंकी भी कर लेता हैं लेकिन इससे वोट नहीं मिलने वाला. जस्टिस पार्टी के अध्यक्ष उदितराज पर तो मायावती खासी तल्ख हैं. अरे, वह बेपैंदें का लोटा हैं. उसकी हैसियत ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ने की भी नहीं हैं. पांच सितारा कल्चर के इस आदमी ने दलित समाज के लिए कभी कोई लड़ाई लड़ी. दलित समाज को इससे सावधान रहना चाहिए. ❍

राजनीति खुलासा

प्रमोद महाजन की हत्या सम्भोग से समाधि की ओर

बम्बई से एक मिशनरी मित्र ने प्रमोद महाजन की हत्या के दूसरे ही दिन मुझे यह सूचना दी कि प्रमोद महाजन की हत्या सेक्स मर्डर हैं. यह सेक्स मर्डर शब्द से मुझे क्लियर नहीं हुआ कि सेक्सी प्रवीण भी था या प्रमोद. फोन पर मिली खबर से मैं कोई न्यूज बनाने की स्थिति में हो नहीं पाया. जब 'दलित ध्वाइस' १६-३१ मई की प्रति मिली तब पेज २१ पर मनुवादी मीडियर एण्ड प्रमोद महाजन पढ़कर मेरा माथा ठनक गया. रामरथ यात्रा का सबसे तेज, तर्रार भक्त प्रमोद महाजन, आर.एस.एस. का पक्का अनुयायी प्रमोद महाजन, हिन्दू धर्म का युवा तुर्क प्रमोद महाजन, हिन्दू धर्म का युवा तुर्क प्रमोद महाजन, बी.जे.पी का होनहार युवक प्रमोद महाजन, हिन्दू संस्कृति का दमदार रक्षक प्रमोद महाजन, ब्राहमणवाद का रक्षक प्रमोद महाजन, ब्राहमणवाद का झंडावरदार प्रमोद महाजन, भविष्य के भाजपा की बनती सरकार का रांबिला भावी प्रधानमंत्री, श्री श्री १०८ शुभनाध ारी, परोपकारी, स्वच्छविचारी, ज्ञानाचारी प्रमोद महाजन अपने छोटे भाई प्रवीण महाजन की पत्नी के साथ संभोग

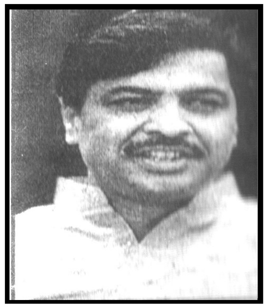

करते रहने के कारण अपने छोटे भाई के हाथों गोली का शिकार हो जाय इससे उत्तम भगवान श्री रजनीश की संभोग से समाधि का दूसरा कोई मिसाल हो ही नहीं सकता. रजनीश कहा करते थें संभोग करते हुए जीयो, संभोग करते हुए मरो, पर सभोग करने कभी मत डरों.

रजनीश भक्त प्रमोद अपने अनुज प्रवीण की पत्नी से सहज संभोग किया करता था.

भले आजीज होकर प्रवीण ने प्रमोद को गोली से उड़ा दिया. यह है हिन्दू संस्कृति की रक्षा का दम्भ भरने वाले की दुर्दशा, ब्राहमण धर्म की रक्षा का दम्भ भरने वाले की दुर्दशा, राम रथ खींचने वाला आधुनिक वीर लक्ष्मण की दशा. छोटे भाई की पत्नी को छूना तो दूर उसका मुंह देखने से भी सभ्य लोग बचते हैं. बेटी, भगिनी का दर्जा होता है. छोटी भाई की पत्नी का. मगध में छोटे भाई की पत्नी को भभह कहा जाता है. बड़े-बड़ें नेताओं के लिए लड़कियों की सप्लाय करने वाला भला घर की चिड़िया को क्यों अछूता रखेगा. इस नीचता पर किसी मीडिया ने पर्दा नहीं खोला क्योंकि इससे हिन्दू धर्म के झण्डाबरदारों की मूंछ नीची हो जाती, पगड़ी गिर जाती, यही कारण है कि कोई मीडिया प्रवीण से कुछ भी नहीं पूछ रहा है, सरकारी तंत्र भी अपने नाक का नेटा सटक जाने में ही भला समझ रहा हैं. अम्बेडकर मिशन परिवार की ओर से साहसी प्रवीण महाजन की कोटिशः शाबासी कि उन्होंने वही किया जो उन्हें बहुत पहले कर देना चाहिए था. खैर देर ही सही मगर प्रवीण ने बहादुरी का काम किया. जागरुक दुनिया उन्हें बहादुर बेटे की कतार में गिनेगी.

(**साभारः** अम्बेडकर मिशन पत्रिका, डॉ० अम्बेडकर और बहुजन के अंक २६, ता. ५ अगस्त २००६.)

vko';d lwpuk

प्रिय पाठको,
हमारा यह प्रयास हमेशा से रहा है कि आपको मनोरंजक के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक सामग्री भी दी जाए. आपकी पसंदीदा पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' ने आपके इस प्रयास में आपकी भरपूर मदद करने का फैसला लिया है. शीघ्र ही एक स्तम्भ प्रारम्भ करने जा रहे हैं जिसमें जापानी भाषा के वर्णाक्षरों से लेकर बोलचाल तक की जानकारी समाहित होगी. इसे जापानी भाषा की कई पुस्तकों को हिंदी में अनुवाद कर चुकी सुप्रसिद्ध हिन्दी व जापानी लेखिका डॉ. श्रीमती राज बुद्धिराजा के द्वारा प्रदान किया जाएगा.

मूल्य वृद्धि सूचना

प्रिय सम्मानित पाठकों
इस वर्ष लगातार हो रही कागज मूल्य में वृद्धि को देखते हुए न चाहते हुए भी पत्रिका के मूल्य में वृद्धि करने को मजबूर हो रहे हैं. आशा है आप सभी सुधी पाठकों का स्नेह हमेशा की तरह आगे भी मिलता रहेगा.

एक प्रतिः ५/-रु० वार्षिकः ६०/-रु०
द्विवार्षिकः १००/-रु० विशिष्ट सदस्यः १११/रु०
आजीवनः ११००/रु०

साहित्यिक प्रदूषण के गुनाहगार

निकम्मा साहित्य लिखने वालों को ऊँचा दर्जा दिया जा रहा है

डॉ.अमरसिंह वधान

यह सच्चाई जगजाहिर है कि घटिया रचना और कुंद हथियार के साथ वास्ता पड़ते ही पता चल जाता है कि दोनों ही आखिरकार बदनामी एवं अपयश का कारण बनते हैं. इस संदर्भ में घटिया रचना आमतौर पर तीन श्रेणियों में विभक्त की जा सकती है. पहली तो वह, जिसमें विचार थे, बोदे और खोखले होते हैं. लेकिन लेखक उसे छपवानें की खातिर कठिन और टेढ़ी-मेढ़ी शब्दावली का सहारा लेता है. वह दूसरी भाषाओं के जटिल-सरल शब्द जबरन और जानबूझकर अपनी रचना में फिट करता है या फिर अपनी भाषा के शब्दों को भी इतना घुमा-फिराकर लिखता है कि आम पाठक समझ ही न सके कि लेखक क्या कहना चाहता है. इस संदर्भ में थोक में प्रकाशित हो रहीं इधर की रचनाओं देखा जा सकता है, जो अपने वायदेनुसार न तो वादों और वर्गो की जमी बर्फ को तोड़ने में सफल है और न हीं प्रहृद एवं प्रबुद्ध पाठकों को आकर्षित करने में सक्षम हैं.

दूसरी श्रेणी वह है, जिसमें विचार तो चाहे अच्छे हों, लेकिन लेखन का ढंग, शब्दों का चयन और उनका प्रयोग इतना घिसा-पिटा होता है कि सब कुछ रसहीन रह जाता है. पाठक पहला अनुच्छेद पढ़ते ही जमाइयों के गहरे समुद्र में डूब जाता है और कई बार पुस्तक पर ही सिर रखकर सो जाता हैं. इसमें भी दो राय नहीं कि अच्छा, स्तरीय और खूबसूरत अंदाजे-बयान होना हर लेखक के वश की बात नहीं. पंडिताऊ शैली में लिखी गयी अनेकों रचनाएँ इसी श्रेणी में आती हैं. स्तरीय लेखन तो एक कठिन तपस्या और साधना हैं, जो वर्षो के अभ्यास और लगन का परिणाम होता हैं.

> आज लेखन का ढंग, शब्दों का चयन और उनका प्रयोग इतना घिसा–पिटा होता है कि सब कुछ रसहीन रह जाता है. पाठक जमाइयों लेने पर मजबूर हो जाता हैं.पंडिताऊ शैली में लिखी गयी अनकों रचनाएँ इसी श्रेणी में आती है.

तीसरी श्रेणी की रचनाओं में न तो विचार उपयोगी होते हैं और न हीं बयान शैली. केवल अपना नाम पत्र-पत्रिका या पुस्तक पर देखने के लिए महज कागज काले किये होते हैं, वह भी सस्ती और क्षणिक शोहरत की खातिर. प्रतिस्पर्धा के नशे में कुछ तथाकथित लेखक स्कूल की पाठ्य-पुस्तकों या फिर प्रकाशित जीवनियों को सीधा आधार बनाकर जीवनपरक लेख लिख मारते हैं, जिसमें न विचार होता है और न हीं चितंन. ऐसी रचनाओं की भारतीय भाषाओं में बाढ़ आयी हुई हैं. इससे सारा साहित्यिक परिवेश प्रदूषित हो रहा है. हमारे यहॉ का लगभग ९५ प्रतिशत साहित्य उपर्युक्त तीन श्रेणियों में आ जाता है. शेष ५प्रतिशत श्रेष्ठ साहित्य वैसे भी इस कचरे में आसानी से मिलता नहीं और कई बार तो वर्षो तक किसी कोने में उपेक्षित-सा पड़ा रहता हैं.

इसमें भी कोई शक नहीं कि अच्छी और संगत भाषा, बुलंद विचार और प्रभावशाली व्याख्या शैली हर लेखक के वश का रोग नहीं हैं. यह तो बड़े सुलझे, उर्वर एवं अनुभवी दिलोदिमाग की उपज होती हैं. इसके हर शब्द में से महक आती है और हर वाक्य में से लुत्फ. हर विचार दिल की गहराई तक उतर जाने वाला होता है. कई बार किसी सुंदर रचना की कुछेक पंक्तियों को बार-बार पढ़ने और उन्हें डायरी में लिखने का मन करता है. बिल्कुल नये, नपे-तुले और उपयुक्त शब्दों के चयन से और फिर उनका बहुत ही संजीदगी से किया गया प्रयोग पाठक को सम्मोहित कर देता हैं. कोई भी ऐसा अनावश्यक, घिसा-पिटा अथवा अर्थहीन व कठिन शब्द नहीं होता, जो पाठक की ऑखों को चुभें या फिर विचार-प्रवाह में अवरोध पैदा करें.

हमारे यहॉ साहित्यिक त्रासदी यह है कि जो और कुछ नहीं बन सकता, वह झट से लेखक बन जाता है. यह सोचकर कि अमुक भाषा उसकी मातृभाषा है, इसे लिखने में कौन-सा जोर लगता हैं. वह भूल जाता है कि मातृभाषा में स्तरीय लिखने के लिए भी निरंतर अभ्यास, विशेष सावधानी एवं अनुभव की आवश्यकता होती हैं. यहॉ विशेष रुप से गौरतलब है कि रचना काग़ज के सीने पर मनचाही मात्र झरीटें नही है. लिखी गयी रचना का परिशोधन-संशोधन करना या उसकी काट-छॉट करना भी जरुरी हैं. लेकिन इधर चाय पीते समय क्षणिकाएँ लिखी

जाती है, रसोई में काम करते हुए ग़ज़ले तैयार होती हैं और सैर-सपाटे के दौरान कहॉनियॉ लिखी जाती है, जिनमें सोच, चिंतन और दर्शन नाम की कोई चीज नहीं होती. बस, लिखने के लिए अंधाधुंध लिखा जा रहा हैं. दर्जन-भर कवितॉए लिखकर स्वंय को 'निराला' अथवा महादेवी समझने लगते हैं. इस प्रकार का लेखन निश्चित रुप से साहित्य को प्रदूषित करता है.

यूं तो साहित्य का बाजार प्रारंभ से ही असंगठित रहा हैं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'मिश्र बंधु विनोद' का मजाक उड़ाया और हिंदी साहित्य का इतिहास लिखते समय उनकी 'कविता कौमुदी' का नोटिस तक नहीं लिया. फिर आगे चलकर 'अज्ञेय' ने चौथा सप्तक में उन्हीं कविताओं की संकलित किया जो उनकी स्तुति करने वाले थे. सुमन राजे, राजकमल चौधरी, धूमिल आदि को विस्मृत कर दिया गयाा, जबकि संकलित कवियों की तुलना में ये श्रेष्ठ कवि थे. अफसोस तो इस बात का है कि सुमन राजे ने भी 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' में कई श्रेष्ठ रचनाकारें का उल्लेख न करके पूर्व परंपरा को दोहरा दिया. एक अन्य कोण से देखा जाए तो साहित्य में समरसता, सरलता और सरसता कम हुई हैं और साहित्य अधिक बौद्धिक होता गया हैं. सत्ता और राजनीति ने तो साहित्य को अपना विपक्ष मान लिया हैं. इतना ही नहीं, साहित्य को प्रचार-प्रसार के लोकप्रिय माध्यमों से पृथक रखा गया हैं ताकि सत्ताधीशों की अनैतिकता, भ्रष्टाचार और शोषण की कलई न खुल जाए. लोग अच्छा साहित्य पढ़ना चाहते हैं, लेकिन साहित्य को जान-बुझकर जनता से दूर रखने की साजिश हैं.

इधर पाठकों की रुचि और उत्सुकता को नजरअंदाज करते हुए बाजार में ध ड़ाधड़ नयी जिल्दें आ रही हैं. पाठकों को पता ही नहीं चलता कि वह क्या पढ़ें. जिसे भी हाथ लगाता है, उससे निराशा ही हाथ लगती हैं. स्तरीय एवं

पठनीय विरल कृति ही होती हैं. दुःख तो इस बात का भी है कि हमारे आध ो से ज्यादा लेखक स्वयं पाठक नहीं हैं. पाठक बनने के लिए उनके पास न तो समय है, न ही शौक-लगन और न ही इच्छा. कदाचित लेखन को ही वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं. वे कितनी आसानी से भूल जाते है कि घरेलू पुस्तकालय लेखक का ज्ञानकोश और सच्चा मित्र होता हैं. जरुरत पड़ने पर दूसरों की पुस्तकें मॉग कर पढना तथा अखबार के केवल रविवारीय अंको को मंगाना की कुछ लेखकों की आम आर्थिक आदत हैं.

यूॅ तो लघुकथा और क्षणिका समय की कमी और सुस्त गति से चलते विचारों को चुस्ती-फुर्ती से पेश करने का एक माध्यम हैं. लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि इनमें से कहानी या क्षणिका की सारी नजाकत, अभिव्यंजना एवं भाव-प्रवणता ही गायब हो जाए. आज की लघुकथा और क्षणिका कुछ इस कदर लघु हो गयी है कि इनमें मिनी स्कर्ट की तरह कुछ ढॅकने या किसी आवरण की गुंजाइश ही बाकी नहीं रहीं. दूसरी ओर खुली कविता विचारों के बेरोक और बेटोक प्रवाह के लिए हैं. पर इसका मतलब यह नहीं कि खुली होने की आड़ में किसी विचार को इतना खोलकर उलट-पलट कर दिया जाए कि बिना बटनों की कमीज की तरह नीचे पेट नजर आए और वह कविता न रहकर गद्य को भी लॉघ जाए. इधर लघुकथा, क्षणिका और खुली कविता के साथ यह भद्दा मजाक भी हो रहा है. जबकि कविता कवि की ऊर्जा और भीतरी रोशनी है, एक धड़कती हुई कोशिका हैं. कवि संवेदनात्मक और रागात्मक संपृक्ति के बिना कविता में परोसा गया अनुभव नकली होगा.

इससे किसी को मानसिक छीलन हो सकती है कि घटिया किस्म का साहित्य पैदा करने में हमारे आलोचकों ने भी बड़ी अहम भूमिका निभायी है. जो भी निकम्मा साहित्य लिखा गया, इन आलोचकों ने उसकी निंदा करने की बजाय उसकी प्रशंसा के ऐसे पुल बांध ो कि लेखक उससे आगे नहीं बढ़ सके और न हीं ऊपर उठ सके. हमारे यहॉ के तथाकथित समीक्षकों में भी कृति की राह से गुजरने का न तो धैर्य है और न ही निर्भिकता से पुस्तक की समीक्षा करने का माछा. समीक्षा के सिद्धातों एवं मानदंडों की उपेक्षा करके केवल मित्र लेखक की डेढ़ इंच मुस्कान की खातिर कृति की समीक्षा लिखी जाती है. प्रायोजित आलोचना को बढ़ावा मिला हैं. यह जनतांत्रिक मूल्यों से भी दूर हैं. जबकि लेखन के लिए अच्छी और रचनात्मक आलोचना बहुत जरुरी हैं. इस संदर्भ

में हंगेरियन कवि मिकलॉस गाइम्स ने ठीक ही कहा है कि किसी देश का परिचय उसके साहित्य की आलोचना से मिलता है. तात्पर्य यह कि आलोचना अमुक देश के साहित्य का स्तर एवं उसकी गुणवत्ता का निर्धारण करती हैं.
यह भी कह देना जरुरी है कि पुस्तके लिखना बहुत कठिन है और पुस्तकें बनाना बहुत सरल हैं. लेकिन ज्यादातर लेखक पुस्तकें बनाते ही हैं. चार किताबें लिखीं और उन्हीं को तोड़-मरोड़कर और काट-छॉटकर तीन और बना डाली. महानगरों, राजधानियों एवं बड़ें शहरों के पारी खेल चुके लेखकों एवं साहित्यकारों का आजकल मुख्य लेखन कार्य यही हैं. यह भी कि कोई अन्य भाषा सीख ली तो उसके साहित्य की चोरी करके अपने नाम से छाप लिया. एक तथाकथित लेखिका ने दिल्ली के एक हिंदी कहॉनीकार की एक कहॉनी को अपने नाम से हू-ब-हू छपवा लिया, यह कहकर कि पंजाबी कहॉनी का अनुवाद है यह. सच्चाई सामने आने पर लेखिका को मॉफी मॉगनी पड़ी. गुजराती साहित्य और मराठी साहित्य को साहित्यिक मठाधीशों और उनके आदर्श शिष्यों ने खूब लूटा हैं. वैसे भी इन भाषाओं को सीखना कोई मुश्किल काम नहीं हैं. इसी प्रकार अंग्रेजी, रुसी, जापानी, जर्मन अथवा फ्रांसीसी भाषा सीखकर इनके साहित्य को भारतीय पोशाक पहनाकर अपने नाम का लेबल चिपकानें वालों की भी कमी नहीं हैं. भारतीय लिबास में इतराते इधर के कई जापानी हाइकु इसका ताजा व प्रखरतम उदाहरण हैं. साहित्य-शोध के क्षेत्र में फैला व्यवसायवाद, शोषण एवं प्रदूषण भी कोई कम हानिकारक नहीं हैं.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की नयी राष्ट्रीय कार्यकारिणी गठित

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की एक बैठक पिछले प्रीत बिहार कॉलोनी दिल्ली में आयोजित की गई. जिसमें नयी राष्ट्रीय कार्यकारिणी के गठन पर विचार किया गया. नयी कार्यकारिणी में डॉ. राजबुद्धिराजा (नई दिल्ली), अध्यक्ष, भारत जापान सांस्कृतिक मंच को संरक्षक, श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा (इलाहाबाद) लेखिका को अध्यक्ष, डॉ. मालती(नई दिल्ली), प्राचार्य, कलिंग कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,श्री सुभाष सेतिया, समाचार निदेशक, आकाशवाणी, नई दिल्ली, डॉ० महेन्द्र कुमार, रीडर, हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्रीमती राकेश नदिंनी, वरिष्ठ लेखिका, नइ दिल्ली को उपाध्यक्ष, गोकुलश्वर कुमार द्विवेदी संपादक, राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज को सचिव, ईश्वर शरण शुक्ल, संपादक, रेमण्ड पत्रिका, इलाहाबाद को संयुक्त सचिव, श्रीमती जया गोकुल, प्रबंध संपादिका रा.हि.मा.विश्व स्नेह समाज को प्रसार सचिव मनोनित किया गया. बैठक में नई कमेटी के चयन के बाद संवाददाता सम्मेलन में सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि नई कमेटी का कार्यकाल एक वर्ष का होगा. कमेटी इस वर्ष संस्थान साहित्य के क्षेत्र में कुछ नया आयाम स्थापित करने का प्रयास करेगी. साथ ही एक हिंदी महाविद्यालय, एक पुस्तकालय खोलने के लिए साहित्यप्रेमीयों से सहयोग लेने का प्रयास करेगी.
संस्थान की सरंक्षिका डॉ० राज ने कहा कि संस्थान में जापान, जर्मनी, मारीशस, पाकिस्तान, सूरीनाम सहित अन्य देशों के हिंदी सेवियों को जोड़ने का पूरा प्रयास करुंगी. संस्थान अपने नाम के अनुरुप शीघ्र ही एक अपनी अलग पहचान बनाएगा.

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेज़ें. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ३. पत्रिका के सदस्य पत्रव्यवहार व धनादेश भेजते समय सदस्य संख्या का उल्लेख अवश्य करें.४.हम साहित्यकारों को फिलहॉल कोई मानदेय नहीं देते. केवल उपहार स्वरूप दो प्रतियॉ ही भेजते हैं जिसमें उनकी रचनाएँ छपी होती हैं. भविष्य में कुछ मानदेय देने की योजना विचाराधीन हैं. लेकिन वह मांगी गयी सामग्री पर ही देय होगी. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डी.डी 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को कहॉनी तो अच्छी लगती ही होगी. आइए इस बार 'सभ्य कौन' एक कहॉनी को पढें

आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

सभ्य कौन ?

✍महर्षि गिरिधर योगेश्वर

घटना सन् 1893 की हैं. उन दिनों स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागों नगर में आयोजित 'विश्वधर्म सम्मेलन' में भाषण देने के लिए गए थे. वे सन्यासी थे, अतः गेरुए वस्त्र ही पहनते थे. अमेरिकावासियों के लिए यह कुतूहल का विषय था. विवेकानन्द जहां भी भ्रमण के लिए जाते, वहीं लोगों की अच्छी–खासी भीड़ जाम हो जाती. कहना न होगा कि कुछ मनचले युवक उन्हें 'सिर फिरा' समझकर फबतियां तक कसने पर उतारु हो जाते थें. पर विवेकानन्द मुस्करा कर सब सह जाते.

एक बार तो हद हो गई. गेरुआ कपड़ों में विवेकानन्द जब एक सड़क से गुजर रहे थे कि शरारती युवकों के दल उन्हें घेर कर खड़ा हो गया. वे उनसे बड़ा असभ्य अश्लील सा हंसी–मजाक भी करने लगे. शांत, धीर विवेकानन्द तनिक मुस्कराए. फिर भीड़ को सम्बोधित करके बोले, 'भद्रपुरुषों, प्रतीत होता है कि आपके यहां केवल पहनावे को ही महत्ता दी जाती है, पर मेरे देश भारत में ऐसा नहीं. वहां सभ्यता की कसौटी 'वस्त्र नहीं, चरित्र है' इतना सुनना था कि सभी युवक चुपचाप वहां से खिसक गए.

विचारणीय है कि विवेकानन्द का यह कथन हम भारतीयों पर आज कहां तक खरा उतर रहा हैं.

++++++++++++++++++

स्नेह बाल प्रतियोगिता–०२

हम इस अंक से छोटे बच्चों के लिए एक बाल प्रतियोगिता प्रारम्भ कर रहे हैं. जिसमें प्रत्येक माह एक विषय दिया जाएगा जिस पर आपकों एक चित्र बनाकर भेजना होगा. प्रथम स्थान पाने वाले बाल चित्रकार के चित्र को प्रकाशित किया जाएगा तथा द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले का नाम, पिता का नाम, कक्षा व पता छापा जाएगा साथ ही प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा. यह प्रतियोगिता ५ वर्ष से १२ वर्ष तक के उम्र के बच्चों के लिए ही होगी. इसके लिए बच्चों को अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य से उम्र लिखवाकर हस्ताक्षर कराना होगा. अपने चित्र के साथ नीचे दिया गया कूपन लगाना न भूलें अन्यथा स्वीकार्य नही होगा.

विषयः झगड़ा मत करो

कूपन

संपादक, विश्व स्नेह समाज,
बाल चित्र प्रतियोगिता न०१, एल. आई.जी.-६३, नीम सरॉ कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
प्रतिभागी का नामः.................
पिता का नामः......................
कक्षाः......स्कूल का नामः...पताः...

स्नेह बाल चित्र प्रतियोगिता–01 का परिणाम

प्रथम
मुकुल सचदेवा पुत्र श्री राधेश्याम,म.न. 1110/30, गोपाल नगर, सोनीपत, हरियाणा

द्वितीय
रोहित यादव, पुत्र श्री रामसरीख यादव, कक्षाः 4, 423, नर्वी मुम्बई, महाराष्ट्र

तृतीय
नम्रता यादव, पुत्री श्री शिवगोपाल यादव, कक्षाः 6, पताः जाफरा बाजार, गोरखपुर,

डॉ० उपेन्द्र प्रसाद

1 जनवरी १९४७ को ग्राम कुमईया, जिला-समस्तीपुर, बिहार में पिता स्व० रुपनारायण लाल व माता स्व० रामपरी देवी के घर में जन्में डॉ० उपेन्द्र प्रसाद के बाबा स्व० लाल बिहारी लाल जमींदार थें. आपके पिता के लगभग एक शताब्दी पूर्व नौकरी के कारण पड़रौना, उ.प्र. के निवासी बनें. अपने पिता की चार पुत्रों डी.एन.लाल, उपेन्द्र, सुरेन्द्र, व नरेन्द्र में द्वितीय डॉ उपेन्द्र की शादी श्रीमती मंजू श्रीवास्तव से हुई.

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा गर्वमेन्ट मॉडल स्कूल पड़रौना व यू.एन.इंटर कॉलेज, से करने के बाद गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से १९६८ में स्नातक, १९७० में राजनीति शास्त्र से परास्नातक की उपाधि धारण की. 'गॉधीवादी समाजवाद एक आलोचनात्मक अध्ययन' शोध शीर्षक पर पी.एच.डी की उपाधि अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से प्राप्त की. २१ अक्टूबर १९७० से बाबा राघवदास भगवान दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय आश्रम, बरहज, में राजनीति विज्ञान विभाग में प्रवक्ता एवं अध्यक्ष के रुप में १९९० से अब तक रीडर व विभागाध्यक्ष तथा १ जुलाई २००२ से प्राचार्य के रुप में कार्यरत हैं.

छात्र जीवन में विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ० राममनोहर लोहिया तथा कालमार्क्स के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा. एस.वाई.एस. गोरखपुर विश्वविद्यालय शाखा के सचिव रहे तथा राजनीति, आन्दोलन व समाज सेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदन दिया. डॉ० उपेन्द्र पूर्वांचल अंग्रेजी हटाओं सम्मेलन के संयोजक, जिला खेत मजदूर यूनियर, देवरिया के अध्यक्ष, जनपदीय फाासिस्ट विरोधी सम्मेलन, देवरिया के अध्यक्ष, गुआक्टा कार्यकारिणी सदस्य, जनजागरण मंच के संयोजक, पोलिटिकल साइन्स एसोसिएशन के संयुक्त सचिव, जनपदीय महाविद्यालय शिक्षक संघ के महामंत्री तथा जिलाध्यक्ष के रुप में कार्य किया. पिंजरापोल गौशाला समिति बरहज के मंत्री, नगर शिक्षक महापरिषद बरहज, के अध्यक्ष, तक परमहंस बाबा राघवदास जन्म शताब्दी समारोह आयोजन समिति आश्रम, बरहज के मंत्री, बाबा राघवदास एवं अमर शहीद पण्डित रामविस्मिल सेवा संस्थान आश्रम बरहज के संयुक्त सचिव, सफाई मजदूर यूनियन नगर पालिका परिषद गौरा बरहज के अध्यक्ष,लोक जागरण मंच, देवरिया के महामंत्री, उत्तर प्रदेश भोजपुर क्रान्ति परिषद के अध्यक्ष, अखिल भारत भोजपुरी क्रान्ति परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष, २००५ से अब तक भोजपुरी क्रान्ति परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष, १९९३ में मुख्य नियन्ता तथा चुनाव अधिकारी छात्र संघ, मानव सेवा समिति बरहज के सरंक्षक, महाविद्यालयीय शिक्षक आन्दोलन में सक्रिय, जिला मजदूर मोर्चा, देवरिया के संयोजक, व्यापार एवं कुटीर उद्योग मण्डल, बरहज, के अध्यक्ष, १२५ वीं गांधी जयन्ती आयोजन समिति बरहज के संयोजक, यू.पी. पोलिटिकल साइन्स एसोसिएशन के प्रान्तीय उपाध्यक्ष, समवाय(साहित्यिक, सांस्कृतिक व सामाजिक संस्था) के अध्यक्ष रहें.

डॉ० उपेन्द्र ने लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी कार्य किया है.

प्रधान सम्पादकः बागी बयालीस, हिन्दी साप्ताहिक, गोरखपुर, 'सम्पदा' हिन्दी मासिक, बरहज, वेद प्रकाश स्मृति प्रकाशन समिति गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'संघर्ष पुरुष', राघवदास जन्मशती स्मारिका, भोजपुरी क्रान्ति परिषद के केन्द्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित द यू. पी.जर्नल आफ पोलिटिकल साइन्स के सम्पादक मण्डल के सदस्य, , अरहन्त व राघववाणी के प्रधान सम्पादक, के लेखककिके प्रधाआपआपने लेखन

लेखकः भोजपुरी विचार दस्तावेज, 'संसद एवं राज्य विधान मण्डलों में असंसदीय आचरण की समस्या, भोजपुरी अस्मिता की ऐतिहासिक रुप रेखा तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में खेत मजदूर आन्दोलन का इतिहास, गॉधी वादी समाजवाद, राष्ट्र गौरव

व्याख्यानः समसामयिक, शैक्षिक, राजनीतिक व सामाजिक विषयों पर उत्तर प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों १७ व्याख्यान, ७३ राष्ट्रीय एवं एक अन्तराष्ट्रीय संगोंष्ठी में सहभागिता, कुल ६६ शोध पढे गए और ४८ प्रकाशित, पांच राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता तथा पॉच राष्ट्रीय संगोष्ठी का संचालन,

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा, द्वारा साहित्य कला विद्यालंकार की उपाधि से अंलकृत किया गया.

++++++++++++++++++

शनिदेव का प्रकोप

डॉ0राज बुद्धिराजा

बचपन से ही मैंने सुन रखा था कि हर शनिवार को तिल-तेल और सिक्का मांगने वालों को दे देना चाहिए. तो मैंने इस ओर ध्यान नहीं दिया पर बाद में जब पंडितों ने मेरे भीतर साढ़े-साती का भय बिठा दिया और मैंने आस-पास शनि देवता कहने वाले लड़को को तेल पैसा देता देखा तो मैंने भी शुरु कर दिया.

सुबह-सवेरे वह हांक लगाता. पैसा लेता और मंगल कामना करते हुए निकल जाता. इसी तरह कुछ वर्ष गुजर गए. अब वो अपने साथ एक और लड़के को भी लाने लगा. मेरे पूछने पर उसने बताया कि यह मेरा छोटा भाई हैं. मैं कभी एक की तेल भरी डोलची में पैसा डालती, तो कभी दूसरे की. शुरु में तो सब ठीक-ठाक चलता रहा लेकिन, बाद में वे दोनों झगड़ने लगे. एक कहता मेरी डोलची में डालो, दूसरा कहता मेरी डोजची में. झगड़ें से बचने के लिए मैं दोनों की डोलची में पैसे डालने लगी.

वह पूरे ब्लॉक का चक्कर काटता और घर के लोग उसकी आने की प्रतीक्षा में लगे रहते. अब उनके मुख से मंगल-कामना कम और अपशब्द ज्यादा निकलते. बी-ब्लॉक में ३०० से ऊपर घर हैं. उन दोनों ने आधा-आधे घर बांट लिए थे. मुझे पता ही नहीं चला कि हम लोग उन दोनों भाइयों की सम्पत्ति बन गए हैं. उन दोनों में से यदि कोई एक दूसरे घर की तरफ गलती से कदम रख लेता तो वे मरने-मारने पर उतारु हो जाते.

मैं सोचती कि ये कैसे शनिदेव हैं, जो शांति के बजाय महाभारत किए बैठें हैं.

इसी बीच, मैं अस्वस्थ हो गई और तिल-तेल के साथ उसे दूसरा कुछ सामान भी देने लगी. सात शनिवार या उससे कही कुछ ज्यादा शनिवार बीत जाने पर जब मैं अपना काम नियमपूर्वक करने लगी तो मैं तिल-तेल पर उतर आई. वह मेरे नौकर से पूछता-'बीबी जी ठीक हैं?'

वो कहता-'हां!'

वह उससे पूछता-'तुम्हारी बीवी जी अब बिस्तर पर कब पड़ेगी?'

वो क्या जवाब देता इसकी तो जानकारी मुझे नहीं मिली. लेकिन, वे दोनों खुसर-फुसर करते रहते. सबसे पहला काम मैंने यह किया कि उस नौकर को घर से बाहर कर दिया और दूसरा काम यह किया कि शनिवार को तिल-तेल देना बंद कर दिया. एक दिन मैंने देखा कि ५-६वर्ष का एक लड़का उसके साथ-साथ चल रहा हैं. मैने पता लगवाया और मुझे मालूम चला कि ये उसका बेटा हैं. एक दिन की बात है कि पैसे के लिए दोनों एक दूसरे को गाली दे रहे थे. बाप ने आव देखा, न ताव, उसके सिर पर ईट दे मारा. बच्वे के सिर से खून बह रहा था. बाद में पड़ोसियों ने बताया कि लड़के को अस्पताल में दाखिल करवा दिया गया और बाप को हवालात में बद कर दिया गया. मैंने सोचा शनिवार को सीध प्रकोप तो उन लोगों पर रहता है, जो उनके नाम पर पैसं मांगते हैं और लोगों को ठगते हैं. वह दिन और आज का दिन न मैंने किसी शनिवार (शनिदेव) को देखा और न उसे तिल-तेल दिया. मुझे लगा कि निश्चल मन से नौ-ग्रहों को प्रणाम करने से वे अपने भक्तों पर अपने आप ही कृपा दृष्टि कर लेते हैं. ईश्वर के बनाए सभी ग्रह कृपा का अनंत सागर निर्मित कर देते हें. और व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार उस कृपा को अपने ऊपर उतार लेता हैं.

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मानार्थ प्रविष्टियॉ आमन्त्रित

अखिल भारतीय साहित्य संगम, २६१/३, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-३१३००१ सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं सम्पादकों से वर्ष २००७ के राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्ट्रियॉ आमन्त्रित करता हैं. संस्था सचिव प्रसिद्ध गीतकार कुलदीप 'प्रियदर्शी' ने यह जानकारी देते हुए बताया कि सम्मानोपाधियों में कवि कुलाचार्य, कवि-सम्राट, साहित्य सागर, साहित्य दिवाकर, कलम-कलाधर, काव्य मधुरिमा, साहित्य श्री, साहित्य शिरोमणि एवं सम्पादक-सरताज की सम्मानोपाधियॉ उनके साहित्यिक योगदान के आधार पर प्रदान की जाएगी. इच्छुक प्रतिभागी अपने श्रेष्ठ कृति की दो प्रतियॉ, अपना संक्षिप्त परिचय, दो रंगीन फोटो तथा स्वयं के दो पतायुक्त पोस्टकार्ड २५/-रुपये के पोस्टेज टिकिट के साथ २८ फरवरी २००७ तक पंजीकृत डाक द्वारा उपरोक्त पते पर भेजें.

संस्था द्वारा नियुक्त निर्णायक मंडल द्वारा चयनित प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा. सम्पादक महादेय वर्ष २००६ में प्रकाशित किसी भी विशेषांक की दो प्रतियां वांछित सामग्री के साथ भिजवाने का कष्ट करावें.

व्यंग्य

मुखिया जी

रामचरण यादव, बैतूल

गौमुखी गंगा, चौमुखी ब्रहमा तथा पंचमुखी हनुमान तो भगवान है इसलिए सदा सुखी है. पर आप सभी अच्छी तरह जानते है कि दस मुखी रावण भी सुखी नहीं रह सका तो भला किसी एक मुखी को पाकर ये मुखिया कैसे सुखी रह सकता है.

मई के महीने में नई हीरो होण्डा पे सवार, रुप को संवार मुखिया जी मुख्य बाजार में गये तो दुर्भाग्य से किसी महिला से टकरा गये. वह मोटी ताजी महिला कोई और नहीं ज्वालामुखी थी. माफी मांगते हुए मुखिया ने मीठी–मीठी बातों से उसका मन बहलाते अपने मन की बात कह डाली। सुनकर पहले ज्वालामुखी भड़की, बिजली सी कड़की मगर थी तो वह भी लड़की.

संसार के सभी प्राणी सदा सुख ही चाहते हैं जबकि सुख बहुत थोड़ा है और उसे पाने वाले अधिक, इसलिए सभी को थोड़ा-थोड़ा सुख ही मिल पाता है. समान रूप से सुख का वितरण संभव ही नही क्योंकि इसे पाने की होड़ में एक से एक धुरंधर शातिर लोग भी शामिल है. सभी जानते हैं कि सरपंच ने अपने पद का प्रयोग करते हुए औरों के हिस्से का सुख भी हथिया लिया है। सरकारी सुख सुविधा के सहारे सुखों के सागर में गोते लगा रहे है. सच पूछो तों मुखिया जी सदा सुखी है. सारे गौंव की खेती किसानी एक तरफ मुखिया की मनमानी दूसरी तरफ बस फिर क्या देखना, अच्छे-अच्छे पानी भरते हैं मुखिया के आगे. मान सरोवर यात्रा के दौरान एक ऐसे ही महान मनुष्य से मेरी मुलाकात हुई जो पांच गांव का अकेला मुखिया हैं. सूरत शक्ल से मनहूस, मुख पर बड़ी-बड़ी मूंछ, लेता है घूस मगर मक्खीचूस बड़ा कंजूस अब आगे मत पूछ वरना मुझे भी मिर्गी आ सकती है. मेरा भी मन मचल सकता है. मूलतः हमें मुखिया के महत्व को उजागर करना है, जो सारे दुखों का सागर है. माना कि अपने पापों को दग्ध करने ब्रहम मुहुर्त में उठकर मुखिया तमाम मंदिर और मठों में जाता है, मगर वह हरदम सिर्फ एक ही मन्नत मांगता है कि है प्रभु मुझे सदा सुखी रखना। स्त्री सुख, संतान सुख, संपत्ति सुख, नैन सुख, मन सुख, तन का सुख आदि आदि जितने भी सुख एक सुखिया को चाहिए वे सभी मुझ जैसे मुखिया को भी जरूर मिलना चाहिये.

मुखिया के मन में जो आता है मुख से वही बड़बड़ाता है. मंगलवार के दिन मोहल्ले वालो की मांग पर मुखिया जी ने मंगल भवन की नीव ऐसे मुहुर्त में रखी कि महीने भर के अंदर ही शेष राशि कुछ न बची। किसी तरह सबने मिलकर मुखिया की इज्जत बचाई वरना वह भी नहीं बच पाती. वैसे भी मुखिया के पास मान सम्मान की कोई कमी न थी। हर उत्सव महोत्सव के अलावा मामूली से काम के लिए मुखिया का मुख्य रूप से आदर सत्कार होता है. महत्वपूर्ण निर्णय करने के पूर्व मुखिया कुछ हम जैसे मुखों से मिलकर उचित सलाह ले लिया करते है. बदले में हमें मुट्ठी भर चने अथवा कभी-कभी मगद के लड्डू खिला दिया करते है. चौधरी की चौधरान, पंडित की पंडताइन, मास्टर की मास्टरनी बाई की भांति मुखिया जी को भी किसी चन्द्रमुखी या सूरजमुखी की आवश्यकता महसूस होने लगी. एक दफा तो चौमुखी विकास की बात करते-करते मुखिया ने अपने लिए किसी भी मुखी की तलाश करने का फरमान जारी कर दिया. फरमान पढ़कर पंडित, पुजारी पटेल और पटवारी ने अपने कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जो इस प्रकार है. गौमुखी गंगा है क्योंकि वह गौ के मुख से निकली है, दो मुखी गणेश है, पहले मानव सिर बाद मे हाथी का सिर जो लगाया है, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकनाथ, त्रिनेत्री व त्रिमुखी शिव भी जगजाहिर है, चारमुखी व्रहमा जी जो चारों वेदों का बखान करते हैं, पंचमुखी हनुमान का ज्ञान भी सभी को है। गौमुखी गंगा, चौमुखी ब्रहमा तथा पंचमुखी हनुमान तो भगवान है इसलिए सदा सुखी है. पर आप सभी अच्छी तरह जानते है कि दस मुखी रावण भी सुखी नहीं रह सका तो भला किसी एक मुखी को पाकर ये मुखिया कैसे सुखी रह सकता है.

मुखिया जी मंदिर, मेले, मजार और हाट बाजारों में अक्सर अकेले ही जाया करते हैं, उन्हें उम्मीद है कि कोई चन्द्रमुखी मिल सकती है. मई के महीने में नई हीरो होण्डा पे सवार, रुप को संवार मुखिया जी मुख्य बाजार में गये तो दुर्भाग्य से किसी महिला से टकरा गये. वह मोटी ताजी महिला कोई और नहीं ज्वालामुखी थी. माफी मांगते हुए मुखिया ने मीठी-मीठी बातों से उसका मन बहलाते अपने मन की बात कह डाली. सुनकर पहले ज्वालामुखी भड़की, बिजली सी कड़की मगर थी तो वह भी लड़की. कुछ खट्टी मीठी गाली के बाद मुखिया के प्रस्ताव को मान लिया लेकिन कुछ ही दिनों में ज्वालामुखी ने अपने जाल में मुखिया को इस तरह कसा कि उसके बाद वह बेचारा कभी नहीं हंसा. सदासुखी रहने वाला मुखिया अब ज्वालामुखी के कारण बेहद दुखी है. हर बार की तरह इस साल भी वह

बरसात में भोपाल गया वहां हड़ताल में फंस गया और काल के गाल में समा गया मगर उसकी मृत आत्मा आज भी भटक रही है. उस आत्मा की शांति के लिए ज्वालामुखी ने महाविद्यालय के महालेखागार से मिलकर महाभियोग यज्ञरचा डाला। आहुति पाकर मुखिया की आत्मा पुनः मानव तन पाने की जिद करने लगी। पृथ्वी लोक पर प्रगट हुए पंचायती स्वराज की सम्पूर्ण जानकारी जब यमराज को दी तो वे भी प्रसन्न हुए तथा ऐसे सुन्दर राज्य की स्थापना हेतु मुखिया को मृत्युलोक वापस भेज दिया। इधर ज्वालामुखी का जाल और कुदरत कमाल, दिल्ली और भोपाल तक पूरी तरह फैल चुका था। निलंबित शिक्षक, अनियमित चिकित्सक, नकली वैद्य, हकीम तथा मानसिक रुप से विक्षिप्त एक मुनीम को साथ लेकर मुखिया ने बहुरुपिया बनकर अपने स्वराज सीमा में प्रवेश किया. टूटे फूटे मकानों की जगह आलीशान महल खड़े हैं. वहॉ की महिलाएँ और पुरुष सारे लिखे पढे हैं. कुछ मुछमुण्डे, कुछ गुण्डो के साथ ही लोगों ने मुर्गी पालने का व्यवसाय शुरु कर दिया हैं. यह सब देखकर मुखिया मन ही मन मुस्कुराने लगे और वापस जाने लगे पर जाते-जाते अपनी छोटी साली सुखवंती की शादी में सरीक होने की ठानी यानि यहां भी मनमानाी. शादी में मुख्य भूमिका अदा करते हुए मुखिया ने सारी समस्याएँ व शिकायतें रद्द कर दी या यूं कहिए कि हद कर दी. राबड़ी देवी कि भांति मुखिया की यह ज्वालामुखी राजपाठ संभालने में पूरी तरह सफल रही हैं. महाकाल की माया का प्रत्यक्ष प्रभाव देखकर मुखिया मौन हैं. मगर वह भाप गया कि मुझसे बढ़कर तो ये मायावती ही ठीक हैं. मेरे रहते तो सभी दुखी थे किन्तु इस मुखी को पाकर सभी सुखाी हैं. गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में स्पष्ट लिखा है-'मुखिया मुख सो चाहिए खान पान सब एक' मुखिया को अपने कर्तव्य का भान हो गया तभी तो उसकी मुस्कान पर आकर मेरी कलम अपने आप रुकी क्योंकि सामने खड़ी थी मुखिया की मुखी. वैसे भी कहॉनी पूरी हो चुकी हैं, कोई महाभारत या मुखिया महापुराण तो है नहीं जो मास डेढ़ मास चले. सार तो यही है कि सुख चाहिये तो मुखिया के पास जाइये. जितने भी सुख एक सुखिया को चाहिए वे सभी सुख मुखिया के द्वारा आपको सहज ही मिलेगें. ध्यान रहें गुरु चेले एक साथ न मिले. एक-एक करके एकांत में अकेले मिले चाहे मेले में मिलो चाहें पान के ढेले पर मिलो पर एक बार मुखिया से अवश्य मिलों. हो सकता है आपको मेरी तरह सुख प्राप्त हो जाये.

गांधी हमारे वास्ते कुर्बान हो गया

गॉधी हमारे वास्ते; कुर्वान हो गया,
सच्चा था देश-भक्त; ये प्रमाण हो गया।
जो सत्य अहिंसा पै चला; आफतों के बीच,
उसके जतन से मुक्त; हिन्दुस्तान हो गय ा।
गांधी हमारे वास्ते...........
दलितों की दशा का; उसे जब भान हो गया,
धोती पहिन के; उनके ही समान हो गया।
महलों को छोड़; झोपड़ी में चर्खा चलाया,
जो मुफलिसी में; दीनों को वरदान हो गया।
गांधी हमारे वास्ते......
आयात घटा; वस्त्र विदेशी जले यहॉ,
सत्ता से असहयोग ही; अभियान हो गया।
कन्ट्रोल नमक तक पै था; हक छीना हिन्द का,
खुद ही नमक बनाना; समाधान हो गया।
गांधी हमारे वास्ते......
बापू के इशारे पै; बन्द जब हुआ लगान,
बॅदोवस्त ध्वस्त; परेशान हो गया।
गांधी ने सहे घात; उर-आघात देश-हित,
सच्चा फकीर; त्याग से महान हो गया।
गांधी हमारे वास्ते.......
वीरान बन गया था जो; जुल्मों से झुलस कर,
गांधी जो आया, देश गुलिस्तान हो गया।
सपना था रामराज्य; हिन्द में हो सर्वदा,
दुखियों के मसीहा का तो; बलिदान हो गया।
गांधी हमारे वास्ते कुर्बान हो गया

डॉ. ओमप्रकाश बरसैया ऊँकार, झॉसी, उ.प्र.

fo'o fganh lkfgR; lsok laLFkku dh iqLrdsa

१. **मधुशाला की मधुबाला** : **लेखकः**राजेश कुमार सिंह **मूल्य** १०.००
२. **अपराध** :लेखकः राजेश कुमार सिंह **मूल्य** : १०.००
३. **सुप्रभात** : दस रचनाकारों का संग्रह **मूल्यः** १०.००
४. **निषाद उन्नत संदेश** : लेखकःचौ० परशुराम निषाद, मूल्यः १०.००
५.अदभुत व्यक्तित्व : लेखकःगोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी मूल्यः १०.००

iqLrdsa ds fy, Hkstsa@fy[ksa% euhvkMZj@Mh-Mh-
lfpo] fo'o fgagh lkfgR; lsok laLFkku] ,y-vkbZ-th&93] uhe ljk;] dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn

राम भक्त हनुमान

✍घनश्यामदास गुप्ता, भोपाल

अतुलित बल धामं हेम शैलाम् देहम्,
दनुज बन कृशानुं, ज्ञानि नामाग्र गण्यम्।
सक्ल गुण निथानं, बानराणामधीशम्,
रघुपति प्रिय भक्तं, बातजातं नमामि।।

रामभक्त हनुमान हिन्दु समाज के जन-जन में पूजनीय हैं. उनके शौर्य, पराक्रम, बल, बुद्धि, ज्ञान तथा भक्ति की गाथाओं में रामचरित मानस ओतप्रोत हैं. इसी कारण वे भगवान के रुप में पूजे जाते हैं. उनके जन्म के बारे में अनेक मान्यतायें हैं. स्कन्द पुराण के अनुसार 'पुंजिका स्थला' नामक अप्सरा को ऋषि श्राप से पृथ्वी पर आना पड़ा, जो 'अंजनी' के नाम से प्रसिद्ध हुई.

इनका विवाह सुमेरू पर्वत पर वानर राजा केसरी के साथ हुआ. लम्बी अवधि बीत जाने पर भी संतान नहीं हुई तो मां अंजनी पुत्र लालसा में मतंग मुनि के पास गई. ऋषि ने उन्हें वृषमांचल पर्वत पर पवनदेव की उपासना करने को कहा. पवनदेव के आर्शीवाद से उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ, जो केसरीनंदन हनुमान के नाम से प्रसिद्ध हुए.

आनंद रामायण के अनुसार ऋष्यमूक पर्वत पर सात हजार वर्ष की तपस्या के बाद भगवान शिव ने मां अंजनी को मंत्र दिया और स्वयं रूद्रावतार के रूप में उनके गर्भ में प्रकट होने का वर दिया. एक अन्य कथा आती है कि महाराजा दशरथ के गुरू वशिष्ट ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया. उसमें से निकली खीर के खाने से तीनों रानियां पुत्रवती हुई. इस कथा से सब परिचित हैं. संयोगवश ऐसा हुआ है कि कैकई के हाथ का खीर पात्र एक गिद्धनी ले उड़ी और पवनदेव ने शक्ति से खीर का वह कटोरा उसकी चौंच से गिरा दिया. वह खीर तेजस्वनी अंजली के हाथ पर गिरी. इसी को खाकर वे भी गर्भवती हुई और पुत्र को जन्म दिया.

स्कन्द पुराण के अनुसार 'पुंजिका स्थला' नामक अप्सरा को ऋषि श्राप से पृथ्वी पर आना पड़ा, जो 'अंजनी' के नाम से प्रसिद्ध हुई. हनुमान जी के अनेक नाम हैं. पवनसुत, केसरीनंदन, अंजनीपुत्र, मारूति, महावीर, बजरंग, वानराधीश, सर्वपातालगामी, शंकर सुवन, पवन तनय, संकटमोचन, रामदूत, एकादश रूद्रावतार आदि आदि. इन सबके पीछे भी इतिहास हैं.

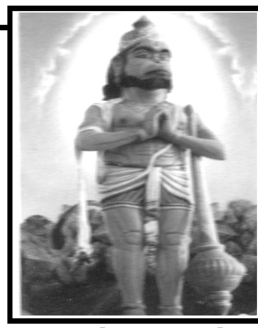

इस प्रकार एक ही तत्व(खीर) के अंश से दशरथ गृह राम, लक्ष्मण, भरत और शुत्रघन पैदा हुए और दूसरी ओर हनुमान जी. कहते हैं इसी कारण भगवान राम ने उन्हें -'त्वम् मम प्रिय भरतहि सम भाई' कहा हैं (हनुमान चालिसा).

शिवपुराण की 'शतरूद्र संहिता' के अनुसार भगवान शिव ने अपने कामारि रूप की परीक्षा के लिये भगवान विष्णु के मोहिनी रूप की सहायता तक को चुनौती दे डाली. इसी क्रीड़ा में शंकर भगवान के अंश से शंकर सुवन उत्पन्न हुवे.

जन्म की भांति जन्मतिथि के संबंध में भी अनेक कथायें प्रचलि हैं. आनंद रामायण हनुमान जी का जन्म मघा नदात्र में चैत्र शुक्ल एकादशी को मानती हैं.

'चेत्र मासे सिते पक्षे, हरि दिन्या महाभिषे,
नक्षत्रे ना समुत्पन्नों, हनूमान रिपूसूदनः।।

एक अन्य मान्यता के अनुसार इनका जन्म कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को हुआ बताते हैं. कुछ लोग कार्तिक कृष्णा चतुदर्शी (दिपावली के एक दिन पूर्व) मानते हैं. अगले दिन दीपावली व्रत रखकर इनके प्रिय भोग देशी घी के चूरमें से भोग लगाकर व्रत खोलते हैं. दीपावली के दिन गणेश लक्ष्मी के साथ हनुमान जी की पूजा करने का भी विधान हैं.

सर्वाधिक मान्यता प्राप्त एवं परंपरा के अनुसार हनूमानजी का जन्मदिन चैत्र पक्ष की पूर्णिमा को मनाते हैं. यह कल्पभेद के अनुसार माना गया हैं, जो आनन्द रामायण के आधार पर हैं.

महाचैत्री पूर्णिमायां समुत्पन्नों अंजनी सुतः
वदन्ति कल्प-भेदेन बुधा इत्यादि केचनः।।

इस मान्यता वाले विद्वान मंगलवार को जन्म हुआ मानते हैं. जबकि कुछ अन्य शनिवार को. संभवतः इसी कारण मंगल व शनि दोनों वारों को इनका व्रत, पूजन व प्रसाद चढ़ाने की प्रथा ने जन्म लिया हैं.

हनुमान जी के अनेक नाम हैं. पवनसुत, केसरीनंदन, अंजनीपुत्र, मारूति, महावीर, बजरंग, वानराध

ाशि, सर्वपातालगामी, शंकर सुवन, पवन तनय, संकटमोचन, रामदूत, एकादश रूद्रावतार आदि आदि. इन सबके पीछे भी इतिहास हैं.

पवनसुत, केसरी नंदन, अंजनीपुत्र, मारूति, पवन तनय नाम कैसे पड़ें इस संबंध में लेख के आरंभ में उल्लेखित हैं. शंकर सुवन और एकादश रूद्रावतार नामों की कथाओं की ओर भी इसी शीर्षक में संकेत हैं. विष्णु के मोहिनी रुप का दर्शन कर भगवान शंकर के स्खलित वीर्य को ऋषियों ने अभिमांत्रित कर अंजनी के कान द्वारा गर्भ में स्थापित किया. इस शम्भु शुक्र से उत्पन्न हनूमानजी अंजनीनंदन शंकर सुवन कहलायें.

रावण महापंडित था और त्रिकालदर्शी भी. उसने शिव की घोर तपस्या कर दस बार अपना शीश भगवान आशुतोष के चरणों में चढ़ाकर एक अमोध वरदान प्राप्त किया था. इससे वह अपने को कालजयी मानकर अहंकारी बन गया था. वह यह भूल गया था कि भगवान शिव का ग्यारहवां रूद्रावतार शेष हैं. भगवान महावीर इसी अवतार के रुप में अवतरित हुए और रावण का सर्वनाश करने में अहम् भूमिका निभाई.

अन्य नामों की सार्थकता के कुछ उदाहरण देखिए. बालकाल में इन्द्र ने इन्हें वरदान दिया कि उनका वज्र भी हनुमान पर कोई प्रभाव नहीं कर सकेगा. इसी बजरंग उपाधि के कारण वे बजरंग बली कहलायें. इन्द्र के वज्र से इनकी हनु (ठोढ़ी) टूटी थी इसलिए हनुमान कहलायें. ब्रम्हाजी ने वर दिया था कि इन्हें ब्रम्हशाप भी नहीं लगेगा और सर्व अंग अभेद्य रहेगें. शिव, वरूण, यम, सूर्य, कुवेर आदि देवों ने इन्हें अनेक वरदान दिये थे. स्वर्ण की लंका का निर्माण करने वाले विश्वकर्मा ने इन्हें स्वनिर्मित दिव्य अस्त्र भेंट करते हुए अवध्य होने का आर्शीवाद दिया था.

हनुमान जी के अदम्य साहस, असम्भव कार्य करने की कलाओं में प्रवीण होने के कारण इन्हें वीर श्रेष्ठ के अलंकार से सम्मानित किया गया था. समुद्र लंघन, संजीवनी बूटी हेतू द्रोणाचल पर्वत ही उठा लाने, लंका दहन कर सीता सुधि लाने, अहिरावण की भुजा उखाड़ने आदि विलक्षण कार्यो द्वारा तुलसीदास जी की 'दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुमरे तेते'-पक्ति को हनुमानजी ने सर्वथा सिद्ध कर दिखाया. मां सीता ने तो 'अजर अमर गुण निधि सुत होऊ। करहिं सदा रघुनायक छोहूं' का आशीर्वाद देकर उन्हें अमर बना दिया. मानस के सुन्दर व लंका कांड तो उनके पराक्रम, बल, शौर्य, बुद्धि, चातुर्य, ज्ञान एवं रामभक्ति से लबालब भरे पड़े हैं. रामभक्ति का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता हैं कि आज भी यह मान्यता प्रचलित हैं 'यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनम् तत्र तत्र कृत मस्तकांजलिम्'. आज भी जहां राम कथा होती है वे अदृश्य रूप से उपस्थित रह कर श्रवण करते हैं.

बाल काल में चपलता के कारण दिया हुआ ऋषि शाप उनके जीवन में बड़ा महत्व रखता हैं. ऋषियों ने कहा था-तुम जिस बल का आश्रय लेकर हमें सता रहे हो, उसे दीर्घकाल तक भूले रहोगें और अन्य के स्मरण कराने पर ही वह तुम्हें प्राप्त हो सकेगा. इससे एक आध्यात्मिक शिक्षा भी मिलती है कि बल-पौरूष का प्रदर्शन न तो सदैव करना चाहिए और न ही दूसरों को सताने के लिए. हनुमान जी को इस बल का स्मरण सीता खोज के समय सुग्रीव ने तथा समुंद्र तट पर जामवंत जी ने कराया था.

बाल्मिकी रामायण के अनुसार तेज, घृति, यश, चातुर्य, शक्ति, विनय, नीति, पुरूषार्थ, पराक्रम और बुद्धि, ये दस गुण भी हनुमान जी में सदा विराजमान रहते हैं. अनिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व अष्ट सिद्धियां और कुबेर की महापदम, पदम, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व नवनिधियों के दाता 'अष्टसिद्धि नवनिधि ा के दाता, असवर दीन्हं जानकी माता', होने का वरदान भी इन्हें मां सीता से ही प्राप्त हुआ. ऐसे महान रामभक्त को कोटिशः नमन्.

प्रणवउं पवनकुमार, खल वन पावक ज्ञान घन,
जासू हृदय आगार, बसहिं राम शर चाप धर।।
महावीर विनवऊं, हनुमाना, राम जासु जस आप बखाना.

डॉ. ओमप्रकाश बरसैया को भारती ज्योति सम्मान

नवचेतना साहित्य एवं कला संस्थान, झॉसी तथा भारतीय वाडमय संघ के संस्थापक झांसी निवासी डॉ. ओमप्रकाश बरसैया 'ऊँकार' छन्दाचार्य को राष्ट्रीय राजभाषा पीठ इलाहाबाद द्वारा 'भारती ज्योति' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया. इसके पूर्व भी देश की दर्जनों साहित्यिक संस्थाओं द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा हेतु डॉ0 ऊँकार जी को सम्मानित किया जा चुका हैं.

कामयाबी और नाकामयाबी

✍बी.एल.मीणा, सहायक प्रबंधक (इंजी. विद्युत) न्यू–ए.टी.एस., पालम हवाई अड्डा

अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, जीवन में कामयाबी हासिल करने के लिये आज प्रत्येक व्यक्ति प्रयासरत दिखाई देता है। कोई भी मनुष्य अपने लक्ष्य में नाकामयाब होना नहीं चाहता। प्रत्येक व्यक्ति यथासम्भव परिश्रम भी करता है। फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति में नाकामयाब ही रह जाते है।

हमें बहुत से लोग ऐसे भी देखने में आते है, कि जो कामयाबी के बिल्कुल करीब पहुँच कर ही कार्य करना छोड़ देते हैं। अगर वे थोडा-सा और धैर्य एवं संयमपूर्वक कार्य करते रहते तो हर हाल में कामयाब हो जाते।

ऐसे लोग कार्य की शुरूआत तो बड़े उत्साह के साथ करते हैं, लेकिन सफल होने के कुछ समय पूर्व ही कार्य करना छोड़ देते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्साही, ईमानदार एवं कार्यकुशल तो होते हैं, इन्हें जीवन में प्रगति के अवसर भी प्राप्त होते हैं, लेकिन फिर भी ये नाकामयाब रह जाते है।

इसका कारण यह है कि ऐसे लोगों में अक्सर निरन्तर कार्य करते रहने की लगन एवं साहस की कमी पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति कार्य करते-करते सफलता के द्वार तक पहुँचकर आगे बढ़ना बन्द कर देते है। वे वही से पीछे लौट आते है। वे अपने लक्ष्य तक पहुँच ही नही पाते। वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने से वंचित रह जाते है। यदि ऐसे लोग कुछ पग और बढ़ाते, थोडा सा प्रयास और कर लेते तो निश्चय ही काययाब हो जाते।

आजकल जो व्यक्ति योग्य हैं, सर्वगुण सम्पन्न है वह अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, वह कभी नाकामयाब नहीं होता असफलता उसी व्यक्ति के हिस्से में आती है जो कि काम करने से जी चुराता है। जब लोगों के जीवन में संकट एवं बाधाएं आती है तो बडी सामर्थ्य या क्षमता वाले व्यक्ति भी कार्य को अधूरा ही छोड़ देते है तथा इस प्रकार विफल हो जाते है।

हम जिस मनुष्य को जीवन में सफलतम व्यक्ति मानतें है, यदि हम उससे उसकी सफलता का रहस्य जानना चाहेगें, तो वो हमें बताएगा कि उसने अपने जीवन में कार्य करते हुए कदापि यह अनुभव न किया था कि मैं बहुत सा कार्य कर चुका हूँ। वह तो सदैव सच्ची लगन से अपने कार्य में जुटा रहा था। यो तो बाधाएं उसके जीवन में भी आई थी। लेकिन वह और भी तेजी से कदम बढाता हुआ निरन्तर गतिशील रहा। इसी प्रकार कार्य करते-करते उसे स्वयं ही आश्चर्य हुआ कि उसने अचानक ही अपना अभीष्ट लक्ष्य पा लिया था। किसी विद्वान का कथन ठीक ही है –

“सिद्धि तो है चरणदासी“ इसका अर्थ है कि जो व्यक्ति निरन्तर आगे ही आगे पग बढाता चलता है सिद्धि यानी सफलता उसे चरण चूमा करती हैं।

समाज में बहुत से लोग ऐसे भी होते है जो कि कार्य करने का उचित ढंग जानते हैं। वे अपने जीवन में आधिकाधिक बाधाओं एवं परेशानियों का सामना करते हुए भी अपने कार्य को सम्पन्न करके ही सांस लेते हैं। यह गुण उनकी रचनात्मक योग्यता का प्रतीक है। ऐसे व्यक्ति जिस कार्य को भी करने का बीड़ा उठा लेते है। उसमें ऐसे तन्मयता से खो जाते है कि सफलता उनके कदमों की दासी हो जाती है।

कुछ लोग ऐसे भी होते जों कि अक्सर कहते है, ”मैं अमुक कार्य के लिये सब कुछ लगाने को तैयार हूँ।“ ये लोग बड़े उत्साह एवं जोश के साथ कार्य करना प्रारम्भ भी कर देते है, लेकिन ये निरन्तर तन्मयता के साथ कार्य करने का महत्व ही नही समझते। ये शीघ्रता एवं करीबी रास्ता खोजतें रहते है। ऐसे लोग परिश्रम, उद्योग एवं मेहनत से जी चुराते है। ऐसे लोग अपने आराम में कमी नहीं आने देता चाहते। ये अपने भाग्य का सितारा चमकने की अथवा लाटरी खुलने की प्रतीक्षा किया करते है। इस प्रकार उनके जीवन के बहुत से अमूल्य वर्ष यों ही बर्बाद हो जाते है।

यदि हम अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाना चाहते है, यदि हम जीवन में आगे बढने की कला सीखने चाहतें है, तो हम अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति होने तक पूरी ईमानदारी, सच्ची लगन एवं परिश्रम से आगे-ही-आगे बढते रहना होगा। जीवन की प्रगति के पथ में आने वाली बाधाओं एवं परेशानियों के आगे धुटने नहीं टेकनें होगे।

जीवन में निरन्तर कठोर परिश्रम करके ही हम अपना व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित कर सकते है।

सम्पूर्ण जीवन की भेंट

स्नेह भेंट

मासिक मिशन

सं. प्रो.रामकिशोर पशीने गुप्ता

५१ वसंतनगर, नागपुर, २२ महाराष्ट्र

वार्षिक चंदाः ६०/ द्विवार्षिकः १००

आजीवनः ६०० एक प्रति ५/-

सरंक्षकः ५०००/-

सपनों की हकीकत

✍सोनी वत्स, यूनिब समाचार

सपनों की दुनिया हमेशा से सबको अपनी ओर खींचती रही है. हर कोई सपने देखता है और सभी यह भी जानना चाहते हैं कि जो सपना देखा, वह क्यों देखा? उस सपने का कोई अर्थ है? क्या उसका हमारे जीवन पर कोई प्रभाव होगा? ऐसे तमाम सवाल हमारे दिमाग में आते रहते हैं. सपनों की रहस्यमयी दुनिया में शोधकर्ताओं की हमेशा से दिलचस्पी रही हैं. इध्र मनोविज्ञान ने इस सपनीली दुनिया का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि अगर सपनों को नियंत्रित करने की कला कोई सीख ले तो वह अपने मूड का संचालन सीख सकता है. इस छोटे से सूत्र से अवसाद व अन्य गंभीर मनोविकारों को लेकर एक नए सिरे से उम्मीद जाग गई हैं.

वैसे सपनें है क्या? हारवर्ड के स्नायुविज्ञानी राबर्ट स्टिकगोल्ड ने अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन को सपनों की यह परिभाषा दी है, ' हर रात दो घंटे के लिए दिमाग चिकित्सीय दृष्टिकोण बावला हो उठता हैं. हम भ्रामक कल्पनांए करने लगते हैं और ऐसी चीजें सुनने और देखने लगते हैं जो दरअसल हैं हीं नहीं.'

लेकिन दक्षिण अफ्रीका के न्यूरोसांइटिस्ट मार्क सॉल्मस सपनों के बारे में एक नई बात कहते हैं. उनका कहना है कि दरअसल सपने इसलिए होते हें कि हमारी नींद सुरक्षित रहें. हर समय एक ऐसी अस्थायी काल्पनिक दुनिया रच देते हैं जिसमें दिमाग उलझा रहता हैं. इससे दिमाग की हर समय कुछ करते रहने की जिज्ञासा शांत हो जाती है और अंततः चैन की नींद सोना सरल हो जाता हैं.

सपनों के शोध कर्ता मिल्टन क्रैमर सपनों को भावनाओं का मापकयंत्र मानते है. क्रैमर के अध्ययन से पता चलता है कि सपनें देखते समय हमार जो मनोदशा होती है, वह अगले दिन हमारे व्यवहार पर असर डालती हैं. अगर हम रात को कोई दुःस्वप्न देखते हैं तो अगली सुबह हम कुछ निराश होते हैं, वहीं अगर कोई मीठा सपना आया हो तो हम सुबह खुद को तरो ताजा महसूस करते हैं. कैमर के इस निष्कर्ष से तो अमूमन लोग बाकिफ ही हैं. परंतु इसके दूसरे सिरे पर जो प्रयोग की संभावनाएं छुपी हैं उनसे लोग अभी तक अनजान हीं हैं. वह कैसे? अगर आप किसी बड़ी मुसीबत से रु-ब-रु हो रहे हो तो क्रैमर की सलाह है कि आपको अपने सपनों की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए. उनका मानना है कि आप अपने सपनों के अंत को बदलकर अपनी मुसीबत को कम कर सकते हैं. सपनों को अपनी जिंदगी की हकीकत को बदलनें की उनकी इस अनूठी अवधारणा ने मनोविज्ञान की दुनिया में हलचल पैदा कर दी है. इस अवधारणा का सबसे कीमती सूत्र यह है कि हम सपनों को स्वयं नियंत्रित व निर्देशित कर सकते हैं. इसका अर्थ यह है कि हम मूड या अपनी रोज की मनोवस्था को बदलने की कुंजी के एक पहलू तक पहुच गए हैं. ज्यादा फैलाकर इस बात को देखा जाए तो यह सिंद्धात संकेत करता है कि हम अपनी खुशी-गम को कुछ हद तक अपने सपनों के माध यम से निदेर्शित करने में समर्थ हो सकते हैं. यह बड़ी बात हैं.

लेकिन ऐसा कैसे होता है. सपने देखते समय हमारे सचेत और निद्रालीन मस्तिष्क के बीच सक्रिय आदान-प्रदान होता रहता हैं. इसी के कारण हम किसी भी दुःस्वप्न को एक सुखद अंत देकर एक सुखद स्वप्न में बदल सकते हैं या फिर हम जागकर उसे बुरे सपने को रोक भी सकते हैं.

सपनों को बदलने के लिए स्वप्न चिकित्सा के चार चरणों को जानना जरुरी है-

सपसे पहले जब कोई बुरा सपना आए तो उसी समय उस सपने के प्रति सचेत हो जाएं.

इसके बाद आप यह पहचानें कि उस सपनें में ऐसा क्या था जो आपको अच्छा नहीं लगा जिससे आपको नकारात्मक अनुभव हुआ.

तीसरा कदम उस दुःस्वप्न को रोकना है. यह याद करना जरुरी है कि आप खुद अपने प्रभारी हैं यानि अपने सपने के नियंत्रक.

अंतिम चरण है-नकारात्मक स्वप्न को सकारात्मक स्वप्न में बदलना. यदि आप कोई दुःस्वप्न देख रहे हैं तो पहले जागिए और उस दुःस्वप्न का कोई सुखद अंत सोच कर दोबारा सो जाइए.

इस तरह अभ्यास करते रहने से कुछ समय बाद सोते हुए भी आप अपने बुरे सपने को अच्छे सपने में तब्दील करने की योग्यता पैदा कर लेंगे. फिर आपके सुनहरे सपनों की हकीकत भी सुनहरी ही होगी, कोई विचारों का बुलबुला भर नहीं.

कुपोषण के शिकार बुजुर्गो को दीजिए डिजाइनर आहार

विनोद वार्ष्णेय, यूनिब समाचार

देश में बुजुर्ग कुपोषण के शिकार हैं. 'नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ न्यूट्रीशन' के वैज्ञानिकों ने हाल ही में इस बारे में अपनी अध्ययन रिपोर्ट जारी की लेकिन मीडिया ने कोई ध्यान नहीं दिया. अध्ययन में बताया गया है कि मलिाओं और बच्चों के बाद देश में कुपोषण के मामले में तीसरा स्थान बुजुर्गो का ही है. ५८ प्रतिशत बुजुर्ग ऐसे है जिन्हें आंखों की ज्योति बनाये रखने के लिए जितना विटामिन ए मिलना चाहिए, उससे तीस प्रतिशत कम मिलता है. छह प्रतिशत बुजुर्ग ऐसे हैं जिन्हें तीस प्रतिशत तक कम कैल्शियम मिलता हैं. इससे इनकी हड्डिया कमजोर हो चुकी हैं. 'नेशनल न्यूट्रीशन मोनीटरिंग ब्यूरो' बताता है कि कंद(आलू आदि), गुड़, चीनी को छोड़ दे तो अन्य सभी पोषक तत्व उन्हें जरुरत से कम मिलते हैं. समस्या यह भी कि ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है, पाचन शक्ति कमजोर होने से अनाज, दालों जैसे जरुरी आहार की मात्रा भी कम होती जाती है.

'हाईफ्लाई' उद्यमियों की नजर अभी इस बात पर नहीं गई कि क्या उनकी पोषकीय जरुरत पूरी करने वाले 'डिजाइनर फूड' बाजार में उतारे जाएं. उम्र का असर थमने में भोजन की भूमिका है, लेकिन इस विषय पर पश्चिमी और देशी सोच में मजेदार अंतर हैं. एक डेनिश अध्ययन में बताया गया है कि कभी कभी एक गिलास वाइन पीना दिल के लिए हीं नही, दिमाग के लिए भी अच्छा हैं. हमारे देहातों, कस्बों और शहरी गरीबों में तो स्पिरिट, ठर्रा, ताड़ी पीने का रिवाज हैं. ये तो स्वास्थ्य का नाश करते हैं, लेकिन उक्त अध्ययन अंगूर की शराब की बात कर रहा हैं. लेकिन इस पर भी मद्य-निषेधियों को गहरी आपत्ति हो सकती हैं. वे उसी अध्ययन में से ढूंढ कर बताएंगे कि यह सच है कि अंगूर की शराब 'डिमेन्टिया' (भूल जाने की बीमारी) रोकती है लेकिन ऐसा उसमें 'फ्लैवोनॉइड्स' की वजह से होता है. ये जबर्दस्त एंटीआक्सीडेंट होते है और एंटीआक्सीडेंट बुढ़ापा थामते हैं, लेकिन कई पौध जनित चीजें ऐसी है जो 'फ्लाईनाइड्स' प्रदान करती हैं जैसे चाय, कई फल और सब्जियां.

बुढ़ापे में क्या खायें पियें, इस मामले में 'सिलेब्रिटी' डाइटीशियन डॉ. शिखा शर्मा की बात सुनिये. वैसे तो वे मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज की एम.डी. हैं, लेकिन खाने पीने के मामले में आयुर्वेदिक सिद्धातों की वकालत करती हैं. अभी उनकी एक मीटिंग अटेंड की तो वे उसमें बता रही थी; खान पान का चयन शरीर की वात, पित्त और कफ प्रकृति के आधार पर किया जाना चाहिए. मूल प्रकृति कुछ भी रही हो, लेकिन ५५ साल के बाद व्यक्ति की वात प्रकृति बनती जाती है. इसलिए बुढ़ापे में खानपान के चयन के मामले में इस पहलू पर ध्यान देना चाहिए. वात प्रकृत्ति के लक्षण हैः सूखी त्वचा, जोड़ों में दर्द, स्नायुविक प्रणाली नाजुक, मीठी चीजों से लगाव, पेट नाजुक.... जिस बैठक में वे यह सब बता रही थी, उनसे पूछा गया, वात प्रकृति के लोगो को क्या खाना चाहिए, तो उन्होंने कहाः मीठे फल, गेंहू और चावल की चीजें यानी बिल्कुल सादा खाना. फल मस्तिष्क की खुराक होते हैं. वाइन की जगह खाइये फल, फ्लैवोनॉइड्स मिलेगें. उनकी एक सलाह महत्वपूर्ण है कि रात को कम खाइये. 'बुढ़ापा थामने में सबसे बड़ी भूमिका कायाकल्प की होती है. प्रकृति खुद ब खुद यह प्रक्रिया रोज करती है, रात को सोते समय. रात को इसलिए हल्का खाना चाहिए ताकि शरीर को का कायाकल्प के लिए ऊर्जा मिल सकें. ❍

देखते रह जाओगे

१. रंगे हुए केश
गेरुआ भेष
और बढ़ता द्वेष
देखते रह जाओगें।
२. ऊँची दुकान
फीका पकवान
और महंगा सामान
देखते रह जाओगे।
३. भ्रष्ट्राचार और लूट
फरेब व झूठ
और आपस की फूट
देखते रह जाओगे
४. पुलिस की गश्त
गरीब पस्त
और गूंडे मस्त
देखते रह जाओगे।
५. पास और फेल
पुलिस की नकेल
और क्रिकेट का खेल
देखते रह जाओगे।

रोहित यादव, अटेली, हरियाणा

कवि

वे कवि है
घर के बाहर
वाह ही वाह है
घर के अन्दर
आह ही आह है

डॉ. नरे०न्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर

पूरे देश में हिंदी की अलख जगाता हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

वैसे तो पूरे देश में हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रधानमंत्री परम विद्व, साहित्य मनीषी सम्माननीय श्रीधार शास्त्री जी हिंदी के लिए पूरे साल हिंदी के साहित्यकारों को सम्मानित करने, विचार गोष्ठियां आयोजित करते रहते हैं. लेकिन इलाहाबाद यह एकलौता संस्थान है व वह अकेले व्यक्ति हैं हिंदी के विकास में इलाहाबाद को जिंदा रक्खें हुए हैं. उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की यह प्रधानता होती है कि कार्यक्रम में देश के कोने-कोने से साहित्यकार एकत्रित होते हैं. आज के इस आर्थिक विषमता व आपधापी के दौर में इतने साहित्यकारों को इकट्ठा करना व उनका मार्ग व्यय वहन करना, रहने खाने की व्यवस्था करना कितना विषम कार्य है इसे आयोजक ही समझ सकता हैं. १४ सितम्बर २००६ को हिंदी दिवस के अवसर पर दो दिवसीय वृहद कार्यक्रम का आयोजन साउथ मलाका इलाहाबाद किया. जिसकी अधयक्षता साहित्य वाचस्पति डॉ० बालशौरि रेड्डी, अध्यक्ष, तमिलनाद हिन्दी एकेडमी, चेन्नई ने किया. इस कार्यक्रम में स्वागताध्यक्ष डॉ० विपिन बिहारी ठाकुर, पूर्व संकायाध्यक्ष, दरभंगा विश्वविद्यालय, बिहार व संचालन डॉ० उमेश चन्द्र मिश्र ने किया.

१४ सितम्बर को कार्यक्रम द्विसत्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसमें देश के विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी की स्थिति, विगत वर्षो में हिंदी ने क्या खोया-क्या पाया का लेखा जोखा व राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रतिष्ठा वृद्धि में अवरोधक तत्व विषय पर देश के कोने-कोने से आये वक्ताओं ने अपने विचार रक्खें.

रात्रि ६ बजें न्यायमूर्ति जी.डी.दुबे, वाराणसी की अध्यक्षता में एक वृहद कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कवि सम्मेलन में श्री प्रदीप लकलक, श्री लाल जी राकेश, श्री साधाना शिवेन्द्र शर्मा, श्री अव्वार खान सगदिल, श्री मुनव्वर अली ताज, श्री वंशीधर बन्धु, डॉ० शाकिर नजर, डॉ० नरेन्द्र मिश्र धड़कन, श्री रमेश राही, श्री रंजन विशद, श्री राधेश्याम सिन्दूरिर्या, श्री प्रमोद कुमार सोनी, श्री रामेश्वर शर्मा, डॉ० सुनीति, श्रीमती अर्चना अची, डॉ० उर्मिला औदीच्य, डॉ० अब्दुस्सलाम रौसर ने काव्य पाठ किया.

१५ सितम्बर ०६ को ११ बजे साहित्य और साहित्यकारों की समस्याएं विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. सायं ३ बजे सारस्वत सम्मान का आयोजन किया गया. जिसमें डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया-दिल्ली, श्री वेद प्रकाश गर्ग-मुजफ्फरनगर, डॉ० दयाल आशा को विद्या वाचस्पति, डॉ. जियालाल हण्डू-चडीगढ़ व श्री राम शरण पीतलिया-भरतपुर को साहित्य वारिधिा, श्री चन्द्र सिंह तोमर, श्री वीरेन्द्र कुमरा दुबे, श्री प्रेमचन्द्र गुप्त विशाल, श्री राधेश्याम शुक्ल, डॉ० सियाराम शरण शर्मा, श्री देवराज शर्मा-पथिक-दिल्ली को साहित्य महोपाध्याय, डॉ० प्रदीप गुप्त- दिल्ली को राष्ट्र भाषा रत्न, डॉ० शान्ति मलिक-लखनऊ, डॉ० मधु भारतीय-गाजियाबाद को साहित्य भारती, डॉ० रजनी सक्सेना-छतरपुर, श्रीमती आशा श्रीवास्तव-लखनऊ को प्रज्ञा भारती, डॉ० डी०डी०ओझा-जोधापुर को विज्ञान वागीश, डॉ० जवाहर लाल कंचन, श्री राम शरण युयुस्त, श्री ब्रहमराज मित्तल, डॉ० हरि प्रसाद दुबे को साहित्य भूषण तथा कुछ अन्य चयनित साहित्यकारों श्री देवेन्द्र नाथ पाण्डेय को आयुर्वेद महोपाध्याय, डॉ० शिवशंकर कटारे, डॉ० परशुराम तिवारी, डॉ० विजय प्रकाश त्रिपाठी, श्री दयानन्द सिंह अटल, डॉ० रामेश्वर वर्मा, डॉ० हीरा लाल साहनी, डॉ० यमुना शंकर पाण्डेय़, डॉ० अक्षय दीक्षित विहान, डॉ० नागेश पाण्डेय संजय, डॉ० मुनि लाल उपाध्याय, श्री रामकरण तिवारी, डॉ० इन्द्रीवर मिश्र, डॉ० अशोक सिंह सोलंकी, डॉ० रामचन्द्र महाजन, शिव प्रसाद शुक्ल, डॉ० विनोद कुमार सिन्हा, डॉ० उमेश चन्द्र मिश्र, डॉ० रामसिंहासन सिंह, डॉ० हेमचन्द्र सकलानी, डॉ० बुद्धदेव आर्य, श्री सिद्धेश्व, डॉ० कमलेश पाठक, श्री भागवत दूबे, श्री गोरखनाथ अग्रवाल, डॉ. बांके बिहारी द्विवेदी, श्री अशोक सक्सेना अनुज, डॉ० उमेश नन्दन सिंहा, डॉ० सुन्दर लाल बूटाणी, श्री महेन्द्र भट्ट, डॉ० व्यास नारायण दुबे, डौ० ओंकार नाथ द्विवेदी, डॉ० अनुज प्रताप सिंह, डॉ० अनिरुद्ध सिंह सेंगर, डॉ० पी०एल०झा, श्री अशोक पाण्डया, श्री भगवान दास नियाज, श्री अवधेश शुक्ल, डॉ० गिरिजाशंकर योगी, सुश्री निखत बेगम को विद्या वागीश से तथा श्री सतीश आर्य, श्री कुंवर योगेन्द्र बहादुर सिंह, श्री कपिल देव राम प्रभाकर को क्षेत्रीय भाषा के लिए सम्मानित किया गया.

सौ० विमला सत्यनारायण मिश्र स्मारक निधी द्वारा ७१ हजार की पुस्तकें भेंट

मुम्बई, वरिष्ठ पत्रकार एवं 'जीवन प्रभात' के सम्पादक सत्यनारायण मिश्र

की प्रेरणा से साहित्य-प्रचार की दिशा में स्मारक निधि की ओर से पिछले वर्ष जिन पुस्तकालयों को पुस्तकें भेंट भिजवायी गयी, उनमें कर्नाटक साहित्य अकादमी-बेंगलूर, भंते मुदितानंद वाच-बल्लारपुर, हिन्दी प्रचार समिति-जहीराबाद, बैजनाथ चतुर्वेदी ग्रंथा, नगर ग्रंथा.-हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा-गुलबर्गा, सरस्वती महल लाय-तंजाऊर, मुस्कुट ग्रंथा. पंचवटी वाच-नासिक, हिन्दी समाज सार्व. वाच. , मं. गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, हिन्दी परिषद, विदर्भ रा.प्र.समिति, साहित्य संघ, विक्रमा ग्रंथा. , अमरावती विश्वविद्यालय, भागीरथ वाचनालय, जिला ग्रंथावली, हिन्दी प्रचार सभा, गुरुदेव वाचनालय, मराठवाड़ा साहित्य परिषद, नगर वाचनालय, अकोला जिला जेल, गोंमतंक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, मणिपुर विश्वविद्यालय, असम विश्वविद्यालय,सत्यर्थी पाठागार, जिला पुस्तकालय सिलीगुडी, हिन्दीपुस्तकालय देरगांव, नृसिंह पुस्ताकलय बीकानेर, जैन पुस्तकालय, सार्व पुस्ताकलय-चुरु, शारदा ज्ञानपीठ, आर्यभाषा पुस्तकालय, हिन्दुस्तानी एकेडमी, रामकृष्ण मिशन, वात्सन्य ग्राम, सिन्हा लायब्रेरी, राजाराधिकारमण पुस्तकालय, राज्यपुस्तकालय धनबाद, दिनकर पुस्तकालय, मारवाणी पुस्तकालय, नेहरु वाचनालय तथा संग्रहालय, केन्द्रीय गंथावली, सरस्वती पुस्ताकलय, हिन्दी पुस्तकालय, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं. अब तक स्मारक निधि की अेर से कुल ७१ हजार की पुस्तकें भेट की जा चुकी हैं. सुव्यस्थित एवं नियमित सार्वजनिक पुस्तकालयों के इच्छुक अधिकारी पुस्तकों की भेंट के लिए आवेदन प्रारुप मंगवा सकते हैं. लिखें:

संयोजक, सौ० विमला सत्यनारायण मिश्र स्मारक निधि, ए ४/१, कृपानगर, मुम्बई, ४०००५६

डॉ० मंसूरी को विद्यावारिधि एवं भारती ज्योति

लखीमपुर खीरी निवासी एवं भाग्य दर्पण मासिक के सम्पादक डॉ० इकबाल अहमद मंसूरी को साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परियॉवा, प्रतापगढ़, उ.प्र. द्वारा रजत जयन्ती के अवसर पर पूर्व जिला जज रामचन्द्र शुक्ल, उ०प्र० साहित्य सम्मेलन लखनऊ के सचिव तथा सहकारी समितियों के पूर्व सह निबन्धक और साहित्यकार डॉ० मिर्जा हसन नासिर तथा सन्त रवि कान्त खरे बाबाजी द्वारा संयुक्त रुप से विद्या वारिधि की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया.

उक्त सम्मान डॉ० मंसूरी को हिन्दी वागूमय को समृद्ध करने व उनकी बहुमूल्य साहित्यिक सेवाओं के लिए अकादमी द्वारा प्रदान किया गया. इस अवसर पर भोपाल, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, बिहार आदि के साहित्यकार मौजूद थे.

डॉ० मंसूर को १४ सितम्बर ०६ को हिंदी दिवस के अवसर पर साहित्यिक सेवाओं के लिए राष्ट्रीय राज भाषा पीठ, इलाहाबाद द्वारा 'भारती ज्योति' की मानद उपाधि भी दी गयी.

डॉ० मंसूरी को इस सारस्वत सम्मान के लिए भाग्य दर्पण के प्रबंध संपादक डॉ. ए.पी.गुप्ता, सहसम्पादक सन्तोष कुमार गुप्त, अशर्फी लाल शर्मा एडवोकेट, जयप्रकाश त्रिपाठी, नासिर अली सिद्दीकी, प्रदीप कुमार चित्रांशी, डॉ० सन्त कुमार टण्डन, प्रो० धर्मवीर साहनी, आदि ने बधाई दी हैं. उल्लेखनीय है कि हाल ही में निमेश्वर मठ निंगाधाम आसनसोल की संस्था, नोबुल इंसान मंच एवं सतसंग शिरोमणि सभा मानस जयन्ती के अवसर पर डॉ. मंसूरी को उनके साहित्यिक गुणों के लिए नोबु इंसान की मानद उपाधि से विभूषित किया गया हैं.

दोहा सम्राट सम्मानोपाधि से अलंकृत

अखिल भारतीय साहित्य संगम उदयपुर द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २००६ के अन्तर्गत ए.बी. सिंह को दोहा सम्राट से अलंकृत किया गया. एक लाख दोहों की रचना का कीर्तिमान स्थापित करने वाले श्री सिंह की अब तक ४८ दोहा सतसईया प्रकाशित हो चुकी है. इनके अलावा ५१५१ दोहों को संगम ग्रथ और ११०००दोहों का समुद्र मंथन साहित्य जगत में बहुचर्चित है. पारदर्शी-परख के शब्दों में-

अमरेन्द्र बहादुर सिंह से साहित्यकार,
युगों बाद पृथ्वी पर, लेते अवतार हैं।
प्रसिद्ध इन्जीनियर, कलम के कलाधर,
एक लाख दोहे लिख, किया चमत्कार है।
भारतीय संस्कृति के प्रचारक-प्रसारक,
जन-भाषा में भरा ये, काव्य का भण्डार है।

प्रोत्साहन के भाषा-भारती संवाद अंक-६७ का विमोचन

प्रोत्साहन के भाषा भारती संवाद अंक का विमोचन हिन्दी के जाने माने साहित्यकार तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति डॉ. टी मनानी आनन्द के कर कमलों से, मनवानी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के कार्यालय में सम्पन्न हुआ. उन्होंने कहा-प्रोत्साहन एक शुद्ध साहित्यिक पत्रिका है जो नवोदित प्रतिभाओं को, पिछले ३८ वर्षो से लगातार प्रोत्साहित करती चली आ रही हैं. इसमें प्रबुद्ध साहित्यकार सम्पादक जीवितराम सेतपाल की सूझबूझ, लगन एवं श्रम शामिल हैं. मेरा सहकार सदैव प्रोत्साहन को मिलता रहेगा. इस अंक की प्रथम प्रति श्री लक्ष्मणदास मनवानी, इन्दौर को समर्पित कर सम्मानित किया गया.

१.पाला

पलक झपकते ही
बदल लेता है
पाला।
क्या खूब
विश्व के सबसे बड़े जनतंत्र में
खादी बाला।
२.'राजा' का
अपना सा मुँह
आज।
खत्म जो
हो गया
जंगलराज।
सीताराम शेरपुरी, समस्तीपुर,बिहार

आस

मनिद मस्ती
प्रेम-उल्लास
छाई है आज
मेते तन मन पर
अपने मिलन का
शुभ समाचार धुन
जैसे आई फिर
बगिया में बहार
कुन्दन पाटिल, देवास,म.प्र.

ग़ज़ल

धड़कने लगे इश्क ग़र ज़िस्म में तो,
दिल को छुपा करके क्या कीजियेगा?
अदाएं मुहब्बत की जादू भरी हैं,
छुपा न सके तो फिर क्या कीजिएगा?
कभी चुप ही रहना कभी गुनगुनाना,
मचलने लगे दिल तो क्या कीजिएगा?
अगर बेखुदी में सम्हलते सम्हलते,
पड़े लड़खड़ाना तो क्या कीजिएगा?
शोखी तो चाहत की पहली अदा है,
अब दिल को बचा करके क्या कीजिएगा?
हम तो मुहब्बत में हो गए दीवानें,
जादू चला कर के क्या कीजियेगा?
अर्चना श्रीवास्तव, इलाहाबाद

ईनामी प्रतियोगिता ०१ का शब्दः सावन का परिणाम

प्रथम

प्रियतम आना मेरे गॉव!
हरित विछौना, मंजुल मय पथ,
सरस सुमन स्वागत को अथ,
और नीम की सीतल छॉव।
लता ओट लथड़ें परिमल,
विहग गणों का चह-२ चंचल,
मनहर प्रभा द्वार का ठॉव।
प्रियतम ....।
कल-कल करता चॉदी सा जल
मछुवारों की मैत्रिक हल चल,
बंधी बाट पर तिरती नाव।
प्रियतम ....।
निश्छल नेह भाव त्रप्ति से,
श्री की अकर्षण सक्ति से,
बंधेगी बेड़ी तेरे पॉव।
प्रियतम आना मेरे गॉव...

भानु प्रताप सिंह -'क्षत्रिय'
चक पैगम्बरपुर, सिधांव, फतेहपुर, २१२६६३

द्वितीय

राधा
कृष्ण-प्रेम में
भीगी रही,
मीरा
प्रेम-गीत
गाती रही,
नदिया
निश्छल बहती रही,
कल-कल
छल-छल
करती रही।
बदली कभी
कोई छाती,
फुहार सावन
की पड़ती,
बोल कहीं
फूट पड़ते
गीत मंद मंद
चल पड़ते
मन स्वतः ही
कह उठता
कौन है?
जिसने गाया,
कौन है?
जो नाचा,
कौन है।
मन में समाया
कौन हैं
सावन के
मद मस्त मौसम में।
रितेन्द्र अग्रवाल,११/३२०, मालवीय नगर, जयपुर, ३०२०१७

तृतीय

देखो फिर सावन आयां
सबका मन है हर्षाया
देखो फिर सावन आया।
गरज-गरज के बादल आते
वर्षा खूब जम के करवाते
रिमझिम वर्षा की फुहारें
और ठंडी बयार लाया
देखो फिर...........
विरहन के हृदय में फिर,
सुप्त प्रेम उमड़ आया।
बागो में कलियॉ खिली
पुष्प-पुष्प हैं मुस्काया।
देखो फिर ....
राजीव कुमार 'हिन्दी पुत्र',ई-१०८८, राजेन्द्र नगर, आवास-विकास, बरेली, उ.प्र. २४३१२२

ईनामी प्रतियोगिता न० २

शब्दः आतंकवाद

नियमः१. इसमें ३५ वर्ष की उम्र तक के ही प्रतिभागी भाग ले सकते हैं.
२.आपकी कविता में उपरोक्त शब्द का होना अनिवार्य हैं. अपनी प्रविष्टि १५ जनवरी २००६ के पूर्व भेजें.

dkS'kysUnz ik.Ms; chy?kqpEkk,W

अर्थहीन अर्थ

पसीने से तरबतर रिक्शावालें ने इस कंकरीले रास्तें को हिकारत भरी नजर से घूरा था, फिर नुक्कड़ पर ही रुककर बोला, 'चलों जाव बाबूजी पैदल ही, इस रास्तें पर तो रिक्शा ही बैठ जायगा.' इस पर गुस्से में मैंने उसकी हथेली पर दो रुपये रख दिये थे, दोस्त के दरवाजे तक पावों पर ही आया. हफ्ते भर पहले ही खरीदी गई मेरी चप्पलें इस गली में बोल गई थी. इसका इतना सदमा पहुंचा कि मुझे टीवी पर चल रहे रामायण सीरियल में रावण बध ा पर विलखते विभीषण का कोई भी डॉयलाग भेजे में नहीं पड़ा. मंदोदरी का विलाप सुने बिना ही उखड़ा-उखड़ा अपने मित्र से माफ़ी मांगी, फिर ड्राइंग रुम से निकलकर दरवाजे पर आ खड़ा हुआ.

उस रास्तें में एक बार फिर मिलने वाली यातना के बारे में सोच रहा था, तभी देखा हाथों में लकड़ी के खड़ाऊँ के सहारे घुटनों के बल चलता हुआ एक आदमी मेरी ओर ही आ रहा हैं. विकलांगता के बावजूद उसकी रंग-रंग मं चुस्ती-फुर्ती थी और जैसे उसे अपनी विकृति पर कुछ भी संताप नहीं. सोचने लगा, 'यह व्यक्ति अपनी विकलांगता का नगदीकरण कराने के उद्देश्य से दर-दर घूम रहा है, भटक रहा हैं. आग बरसाते हुए आसमान के नीचे तपती तलफनी कंकरीली जमीन पर. फिर भी दुखी तो हैं ही वह. जाने अब तक की जिन्दगी के पच्चीस पच्चीस, अट्ठाइस साल उसने कैसे कॉटे होगें! इसे एक रुपिया दिया जा सकता है; उससे वह थोड़ी दूर के लिए किसी रिक्शें पर बैठ सकता हैं या फिर अपनी भूख ही शान्त कर सकता हैं.. .फिर सोचने लगा,'एकदम से एक रुपिया पाने से इसका दिमाग बिगड़ जायगा, लाई चने से ही तो पेट भरता होगा..चार आने ही काफी होगें. किन्तु हो सकता है झोपड़ी में उसके कच्चे-बच्चे भी हों, उन्हीं के लिए तो झेलता होगा ये सारी यातनाएॅ. ...ठीक हैं, पॅाच रुपये दे दूंगा इसें..... इन क्षणों में मुझे लगा जैसे उस गरीब पर पांच रुपये का उपकार करके मैं अपनी सम्पन्नता को सार्थक करने वाला हूॅं.

घुटनों के बल वह महारथी मेरे पास तक पहुंच चुका था. तुंरत ही मैंने अपनी पैन्ट की जेब में पांच का नोट पकड़ा, फिर सोचने लगा, 'दुःख से कातर इसका स्वर सुनकर मैं दस रुपये तक दे दूंगा; दस रुपये 'डिजर्व' करता हैं ये. खुश हो भी जायगा, एहसान भरी आंखों से देर तक देखेगा मुझे, सोचेगा कि इतना दिलदार आदमी इस शहर में दूसरा कहां होगा.

सोचता ही रहा यह सब! इस पूरे दौरान उसने मेरी ओर देखा तक नहीं..... एक बार भी. मूड़ी मेरी तरफ नहीं घुमाई..... खटखट करता हुआ आगे बढ़ लिया. कोई भी तो संकेत उसके चेहरे पर नहीं था कि वह कुछ चाहता है मुझसे.

बड़ी ही अजीब घड़ी थी यह, जिसमें न मालूम कितनी हस्तियों ने अपने अपने मुल्क की बदहाली से निजान पाने के लिए साधन-सम्पन्न देशों से अरबों रुपयें की इमदाद ली होगी, लेकिन अभी-अभी प्यास बुझाने के दावेंदार एक झरने की तरफ किसी प्यासे ने देखा तक नहीं.

जेब में पड़े हुए छोटे बड़े तमाम नोट अन्दर ही अन्दर चुटकी से रगड़ता रहा बिल्कुल अवाक! एक कंकड़ ने कभी किसी कौवे की प्यास बुझाने में अपने अस्तित्व को सार्थक कर लिया था, लेकिन किसी भी सफलता की गारंटी दे सकने में समर्थ नए-नए नोट मेरी ज़ेब में खुद ही विकलांग बनें पड़े रहे अर्थहीन सें.

++++++++

निष्काम

सुकरु चौरसिया की दूकान के सामने स्कूटर खड़ा करने लगा तो वह मेरे सामने आकर रुक गया. सोच ही रहा था मैं कि कैसा भिखारी है यह, न पैसे के लिए हाथ फैलाये, न मुंह से ही कुछ मांगा, सिर्फ मुझे घूरे जा रहा हैं. मेरी निगाह उसके पैरों पर पड़ी, दोनों पर एक-एक घांव और उनसे चिपकी सौ-सौप मक्खियॉ, फटी बनियानी से झांकते सीने पर काले गंदे बाल और जांघों को लपेटे हुए एक मामूली कपड़े की नेकर! पता नहीं; मन में कैसी घृणा उत्पन्न हुई.. मैं बरस पड़ा उस पर 'अबे जाता भी है या खड़ा खड़ा घूरता ही रहेगा?' जैसे उसने मेरी बात का कुछ भी बुरा नहीं माना, तुंरत ही चल दिया सीधे सड़क सड़क.

मुंह में दो जोड़ी पान दबाकर अनामिका से दांतो को चूना चटाया, फिर चल भी पड़ा घर की तरफ....जाने क्या हुआ ध यान ही न रहा कि मैं स्कूटर पर सवार हूॅं; यकायक हैंडिल से हाथ उठ गये तो मैं उसी जगह लुढ़क गया जबकि स्कूटर चार कदम आगे चलकर चकराया.

चेष्टाहीन दो मिनट यूं ही पड़ा रहा मैं. सहसा किसी ने मुझे सहारा देकर उठाया. आभार प्रकाशित करने के लिए मैं उसकी अरे घूमता कि वह चल पड़ा अपने रास्तें, जैसे सोचते हुआ कि फायदा भी क्या रुकने का इस आदमी के पास! फिर कहेगा ये, 'अबे जाता है या.....!

मारुति पुरम, लखनऊ

++++++++

ग्रह सिर्फ उल्टी चाल ही नहीं चलते हैं.......

✍पं. विजय भांबी

> इतिहास गवाह है कि जब भी दो या अधिक ग्रह एक साथ वक्री हुए है तब अजीब घटनाएं घटी हैं जैसे दो विश्व यु;द्ध, महात्मा गांधी व शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या जैसी घटनाएं वक्री ग्रहों का फल और वक्रीत्व का ही कमाल सिद्ध करते हैं.

आकाश मार्ग में चलते हुए ग्रह कभी-कभी उल्टी चाल चलते प्रतीत होते हैं. इसे ग्रह का वक्री होना कहते हैं. राहु व केतु सदा ही वक्री चाल से चलते हैं, कभी सीधे नहीं चलते. बाकी ग्रह सूर्य और पृथ्वी से खास दूरी पर होने की स्थिति से वक्री होते हैं. वक्री अवस्था में ग्रहों का फल सामान्य स्थिति से बदल जाता हैं. शानि चार माह वक्री रहता है और बृहस्पति भी चार माह इस स्थिति में रहता हैं. दोनों का साथ-साथ वक्री होना राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय व व्यक्तिगत घटनाक्रम को बड़ी तेजी से बदलता हैं, क्योंकि इस अवस्था में वक्री ग्रह उच्चबली होता है और अपने पराक्रम का फल देने में सक्षम होता है. इतिहास गवाह है कि जब भी दो या अधिक ग्रह एक साथ वक्री हुए है तब अजीब घटनाएं घटी हैं जैसे दो विश्व यु;द्ध, महात्मा गांधी व शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या जैसी घटनाएं वक्री ग्रहों का फल और वक्रीत्व का ही कमाल सिद्ध करते हैं.

अपनी-अपनी वृत्ति और राशिगत होने के अनुसार फलों में विविधता तो रहती है. किंतु यह फल रोमांचकारी होते हैं. जैसे शनि जब वक्री होता है तब आपके विचारों, कार्यो को रोक कर आपको विवेचना करने के लिए मजबूर कर देता हैं. इसी तरह बृहस्पति वक्री अवस्था में आपके रुके कार्य पूर्ण कर देता हैं. यदि जानना चाहते हैं कि ये दोनों ग्रह आपके जीवन को किस तरह प्रभावित करेगे तो आप नीचे लिखी अपनी राशि पढ़ें:

मेषः धार्मिक वृत्ति जागरूक होगी, बंधु-बान्धवों से सामजस्य कायम होगा. शनि के कारण आप अपने खर्च का, हिसाब लगाएंगे और इसे नियंत्रित करने की चेष्टा करेगें. विदेश या बाहरी शहरों से कमाई के साधन प्राप्त होगें. उच्च लोगो से संपर्क बन सकते हैं.

वृषभः आपके पैतृक धन का सही-सही मूल्यांकन होगा, धन के दुरुपयोग पर अंकुश लगाने का प्रयास करेगें. बहन-भाई के हिस्से कुछ जाता रहेगा तो उसे देने का प्रयास करेगें या सही बटवारें की बातचीत अवश्य करेगें. अपने कार्यक्षेत्र में हुई लापरवाही का एहसास होगा और परिवार में या नौकरी आदि में अपने पद का दुरुपयोग व चापलूसी करने वालों से दूर रहेगें.

मिथुनः आपकी वृत्ति में छाए कुछ डरों व अंतमुर्खी होने का डर भी समाप्त हो सकता है. शत्रुओं का पराभव कर सकते हैं. कुछ अवरोधक व निराशाओं का अंत करने के प्रयास में भी सफल होगें.

कर्कः फालतू कार्यो में समय व धन का अपव्यय बंद करेगें. शुभ कार्य में धन खर्च तो बंद नहीं होगा किंतु इस बार बहुहितार्थ होगा. अपने रुके हुए प्रयोजनों को फिर से नए सिरे से चालू कर सकते हैं. महत्वाकांक्षाओं के पीछे भागना बंद करना होगा.

सिंहः कार्यक्षेत्र मं निरुत्साहित हैं तो इसमें सुधार होगा, अहम का त्याग होगा और जो आपका भला कर सकते हैं उनसे संपर्क स्थापित करके अपने अभीष्ट के लिए प्रयासरत हो सकते हैं. यदि व्यापार या नौकरी में सहयोगी से मनमुटाव चल रहा है तो इसे समाप्त करने का सही समय हैं.

कन्याः संकुचित वृत्ति का अंत करने में सहायता प्राप्त होगी, अधिकार प्राप्ति का सपना पूर्ण हो सकता है, क्योंकि आपकी लापरवाही पर अंकुश लगेगा. विरोधी गतिविधियों को त्यागकर व्यक्तिगत विकास की ओर अग्रसर होगें. कोर्ट-कचहरी के कार्यो में सफलता मिल सकती हैं.

तुला- व्यक्तिगत लाभ को छोड़कर दूसरों के कार्य करके सम्मान कमानें का सुअवसर मिलेगा. अपनी प्रतिभा व आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर सकते हैं. संतान के उज्जवल भविष्य के लिए आप कुछ ठोस कदम उठाएंगें.

वृश्चिकः किसी प्रकार की लंबी भागीदारी में कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा, अभी इसका उपयोग नहीं हुआ तो बाद में पछतावा होगा. भागीदारों का विश्वास प्राप्त होगा. हो सकता है कि किसी माध्यम से द्रव्य, धन या अपनी ही कोई डूबी हुई पूंजी फिर से प्राप्त हो जाए.

धनुः आत्मकेंन्द्रित को त्यागना होगा, तभी आप अपना भला कर पाएंगे और दूसरों का भी कुछ कल्याण करने की कल्पना कर सकते हैं. पहले से चले आ रहे रोगों से छुटकारा मिल सकता है. इच्छा से अधिक

सपनों से थेरेपी

सपनों को लेकर शिकागों स्थित सेंट ल्यूक मेडिकल सेंटर के स्लीप रिसर्च सेंटर के निदेशक रोसालिन कार्टराइट ने गजब के प्रयोग करके नए निष्कर्ष निकालें हैं. वे मानते हैं कि सपने मानव मस्तिष्क को दुरुस्त करने में अहम भूमिका निभाते हैं. उनका एक प्रयोग इस को साबित करता है. उन्होंने मानसिक रुप से शांत लोगों के एक दल को प्रयोगशाला में सुलाकर उनकी गतिविधियां नोट की. फिर उन्हें सुबह उठने पर दूसरे मूड टेस्ट से गुजारा गया. इसमें इन्हें बारी-बारी से नींद से उठाया गया और उनके सपनों के बारें में विस्तार से पूछा गया. प्रतिक्रियाओं के आधार पर उन्हें दो वर्गो में बांटा गयाः सोने से पहले सामान्य भावना रखने वाले. कार्टराइट ने पाया कि सामान्य मूड वाले लोग जब सोकर उठें तो उनके मानसिक व्यवहार में कोई बदलाव नहीं था. दूसरी ओर, बिस्तर पर बुरे मूड में पहुंचे लोगों ने रात की अच्छी नींद के बाद अगले दिन बेहतरी दिखाई. उनके मूड का उतार-चढ़ाव सपनों में भी दिखा. खराब मूड वाले लोगों की रात की शुरुआत भर में बुरे सपने आए. कार्टराइट के प्रयोग का निष्कर्ष है कि मूड का निर्धारण में होता हैं. उन्होंने पाया कि किसी भी पीड़ित व्यक्ति को रात का आखिरी सपना ही सबसे ज्यादा याद रहने की उम्मीद होती हैं. यह तथ्य चिकित्सा विज्ञान के लिए उपयोगी सूत्र हैं. इससे थेरेपी करने वालों के लिए यह पहचान करना आसाना रहेगा कि उनके किन अवसादग्रस्त रोगियों को ज्यादा मदद चाहिए.

बदल रहे हैं सपने

महिलाएं अब वे सपने देखती हैं जो पारंपरिक रुप से पुरुष देखा करते हैं. यह तथ्य ओराबा विश्वविद्यालय के मोनिक लोर्टी लूसियर और उनके सहयोगियों द्वारा व्यस्कों के सपनों का विश्लेषण करने से सामने आया हैं. अधिकांश महिलाएं अब कामकाजी हैं इसलिए उन्हें परिवार से ज्यादा अपनी नौकरी से जुड़े स्वप्न दिखाई देते हैं. वहीं आधुनिक पुरुष भी घर की जिम्मेवारियों को सम्हालनें लगा है और उसे पत्नी और बच्चों के सपने ज्यादा दिखाई देते हैं. महिला और पुरुष की भूमिका जैसे-जैसे बदल रही है, सपनों में भी यें अंतर नजर आ रहा हैं.

मान-सम्मान व अधिकार प्राप्त हो सकता हैं.

मकरः रचनात्मक व सृजन शक्ति का विकास करने का यही उपयुक्त समय है. संतान-परिवार के साथ-साथ अपना भी लाभ कर पाएंगे. उदासीनता को छोड़ें और अपने उत्तरदायित्व के प्रति और प्रयास करें.

कुंभः कुछ पारिवारिक व घरेलू मसले सुलझ सकते हैं. भावुकता को छोड़ने का प्रयास करेगें. यदि आप यर्थाथवादी बन जाएंगे तो जीवन कम से कम एक वर्ष के लिए सुचारु हो जाएगा. जुए-सट्टे से दूरी रखना लाभदायक होगा.

मीनः वाहन आदि की खरीद या मकान बनाने की कल्पना कर रहे हैं, तो सपना साकार हो सकता हैं. घमंड को त्याग कर परिवार वालों की सहायता से इसे प्राप्त कर सकते हैं आपके प्रारब्ध में बृद्धि होगी.

हिन्दी के प्रति निष्ठा होनी चाहिएः दिनेश शर्मा

इलाहाबाद. हिन्दी हमारी राजभाषा हैं, इसके प्रति हमारी निष्ठा होनी चाहिए, हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हमारे कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में निष्पादित किये जाये. हमें लगातार कोशिश करते रहना है, क्योंकि कोशिशें ही कामयाब होती है' उक्त उद्गार श्री दिनेश शर्मा, मुख्य अभियंता, वायु सेना ने हिन्दी दिवस समारोह में मुख्य अतिथि पद से बोलते प्रकट किये. मुख्यालय में आयोजित इस समारोह के अन्तर्गत कार्यक्रम का शुभारम्भ कवि श्री अजीज जौहरी की 'वाणी वंदना' से हुआ.

हिन्दी अधिकारी श्री बृज किशोर पाण्डेय, निदेशक (विद्युत/यांत्रिकी) ने कार्यालय में गत वर्ष के प्रयासों पर रोशनी डाली तथा हिन्दी समिति के सचिव श्री राजेन्द्र गुप्ता, उपनिदेशक (विद्युत यांत्रिकी) ने काव्य पाठ के लिए सर्व श्री रतीनाथ योगेश्वर, नायब सूबेदार बी.के.एस. चौहान, राजेन्द्र कुमार, राज बहादुर, सुरेन्द्र कुमार को आमन्त्रित किया.

हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों में श्री रतीनाथ योगेश्वर को 'हिन्दी निबन्ध' में प्रथम,श्री व्ही. जी.भालेराव, राकेश कुमार रवि को 'वाद विवाद' तथा हिन्दी टंकण में प्रथम, श्री परमहंस सिंह को 'हिन्दी निबन्ध में द्वितीय, श्री अजीज जौहरी को काव्य पाठ हेतु, सूबेदार मेजर दशरथ लाल को 'वाद विवाद' में प्रथम, श्री पुष्कर लाल को हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए सम्मानित किया गया.

समारोह का संचालन श्री राजेन्द्र गुप्ता ने किया. इस अवसर पर नायक मुकेश हंस, धमेन्द्र कुमार तथा कमलेश सिंह आदि उपस्थित थे.

जरा हंस दो मेरे भाय

☠ब्रिटिश सेना का एक जवान टोनी जैसिंस्की ने आज से बीस साल पहले एक किशोरी से बलात्कार कर उसकी गला दबा कर हत्या कर दी थी.
जब पत्रकारों ने उससे बलात्कारी से पूछा कि तुम अब तक कैसे बचे रहें?
बलात्कारीः मैं तों वैसे हीं बचा रह जाता अगर साल-दो साल मुकद्मा और चल जाता.
पत्रकारः वो कैसे?
बलात्कारीः क्योंकि मुख्य गवाह पर भी बलात्कार का मुकदमा चल रहा हैं और उसका मुख्य गवाह मैं ही हूं.

☠ सोनू (चिंटू से)-क्या सचमुच कार्ड के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है?
चिंटू(सोनू से)-हां बिल्कुल! मेरी मम्मी की ही मिसाल लो. वे मेरा रिजल्ट कार्ड देखकर आराम से बता देती है कि शाम घर आने के बाद मेरे पापा मेरी हड्डियों के साथ क्या सलूक करेगें?

☠ शर्मा जी(नेता दोस्त से)-यार आजकल मैं बहुत पेरशान हूँ.
नेताजी (शर्माजी से)-क्यों क्या हुआ?
शर्माजी (नेता दोस्त से)-दरअसल मेरे बच्चे का विकास रुक गया है. खाने पीन पर भी यह मोटा नही होता. किसी अच्छे डॉक्टर का नाम बताओ.
नेताजी (शर्माजी से)-डॉक्टरों के पास जाने से कुछ नहीं होगा. इसका नाम भ्रष्ट्राचार रखों. फिर देखना इसका विकास किस रफ्तार से होता है.

☠ एक दिन पत्नी ने पति से बड़े शिकायती लहजे में कहा-अब मुझे पक्का यकीन हो रहा है कि आपको मुझसे पहले जैसी मोहब्बत नहीं रही.
पति (पत्नी से)-तुम्हें यह गलतफहमी कैसे हुई?
पत्नी(पति से)-वायदा करो कि मेरी मौत के बाद तुम हर रोज मेरी कब्र पर आया करोगे.
पति(पत्नी से)-हां-हां, निश्चिंत रहो. कब्रिस्तान मेरे दफ्तर के रास्तें में ही पड़ता है.

☠ननकू ने अखबार में सिगरेट पीने की बुराइंया पढ़ी, तो अखबार बंद करते हुए बोला-बस अब से बंद.
पत्नी-क्या सिगरेट पीना.
ननकू-नहीं. अखबार पढ़ना.

☠एक बच्चा घर-घर बिस्किट बेच रहा था. रामनाथ जी के घर जब वह पहुंचा, तो उन्होंने कहा-मेरे तो दांत ही नही हैं. इसलिए मैं इन्हें खरीद कर करुंगा क्या?
इस पर बच्चे ने कहा-हम एक-दूसरे की मदद तो कर ही सकते हैं. आप मेरे लिए इन्हें खरीद लें, मैं आपके लिए इन्हें खा लूंगा.

☠विमान ने उड़ान भरी और ऊपर पहुंचा, तो एयर हॉस्टेस ने कहा-वैसे चाहें तो अब सीट बेल्ट खोल सकते हैं, लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से अच्छा है कि बेल्ट बांधे ही रहें. थोड़ा रुक कर उसने कहा-बेल्ट कस कर बांध लें, तो अच्छा हैं. अभी-अभी पता चला है कि हम खाने के पैकेट नीचे ही भूल आए हैं.

☠जूतों की फैक्ट्री में मजदूरों ने हड़ताल की, लेकिन जब उनकी कोई भी मांग नहीं मानी गई, तो वे लौट आए और मन लगा कर काम करने लगे. मैनेजर को बड़ी हेरानी हुई, लेकिन वह चुप रहा. दो दिन बाद उसे पता चला कि मजदूर लगातार एक ही पांव का जूता बना रहे हैं.

☠प्रेमी-प्रेमिका से-डालिंग शादी कब करोगी? हम और हमारे घर वाले शादी करने को बेताब हैं?
प्रेमिका-प्रेमी से-मैं भी तो अपने नये प्रेमी से शादी करने को बेताब हूँ. लेकिन क्या करुं. जानम तुम समझा करों? मेरा दूसरा प्रिय पति जिससे तुम्हारी ही तरह प्रेम करने के बाद प्रेम विवाह किया था वह तलाक हीं नहीं दे रहा हैं जैसे ही तलाक देंगा मैं तुमसे शादी कर लूंगा.

....

आप भी इस स्तम्भ के तहत चुटकुले भेज सकते हैं. अच्छे चुटकुलें भेजनें वालों को राजरानी चाय की तरफ से बनी हुई चाय मुफ्त भेजी जाएगी.धन्यबाद

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफत

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

दृश्य काव्य की अनूठी कृति

श्रुतिकीर्ति श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना द्वारा रचित दृश्यकाव्य का एक अनूठा सृजन हैं. जिसमें अयोध्या के राजपरिवार के एक ऐसे पात्र का चित्रण है जो उस परिवार का अहम चरित्र है, परिवार में सबसे छोटा होने के नाते वह उपेक्षित ही रहा हैं. उस ओर न तुलसी का ध्यान गया न केशवदास जी का, न तो मैथिलीशरण गुप्त ने उसके संबंध में कुछ सोचा. अपने परिवार में अधिक दायित्वों को ढोने वाला यह चरित्र क्यों नहीं साहित्यविदों के मन, मानस में आया. यह शोध का विषय हैं. श्रीयुत सक्सेना के कवि ने उस उपेक्षित चरित्र को अपने इस नाटक में उठाकर वास्तव में ही एक सराहनीय कार्य किया हैं. मेरे विचार में शतुघ्न और उनकी पत्नी श्रुतिकीर्ति अधिक उल्लेखनीय होने चाहिए थे और उन्हीं को रचनाकारों ने छोड़ दिया.

जो वास्तव में राम वनवास के समय का राज्य का प्रमुख कर्ता है, वहीं उपेक्षित हो और उसकी पत्नी जो सारे अवसाद को अपने से बड़े सभी परिवारजनों की सेवा में अपने कंधे पर ढोते एक नए इतिहास की रचना करती हैं, उसे रेखांकित न किया जाय. यह कितनी बड़ी विडम्बना हैं. श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना की कलम से उस चरित्र के साथ जो न्याय किया है, वह सचमुच में ही अपने में अनूठा है, अपूर्व हैं. इसीलिए भी यह कृति अनूठी हैं कि शतुघ्न की अनुगामिनी बनकर श्रुतिकीर्ति ने एक ओर जहां अपने बड़ों की सेवा की है, वहीं उनके यश की रक्षा भी की है.

उर्मिला और मांडवी से श्रुर्तिकीर्ति की स्थिति भले ही भिन्न हो परन्तु उन दोनों से उसकी स्थिति अधिक सहानुभूति की पात्र हैं. कवि ने शत्रुघ्न और श्रुर्तिकीर्ति दोनों के चरित्र की उदात्ता, सेवा, त्याग और कर्तव्य परायणता का जो निरुपण किया है वह निश्चित ही कवि की अन्तर्दष्ट की उद्धावना का प्रतीक हैं.

अपने कथानक, पात्र, देशकाल परिस्थिति, भाषा भाव और शैली की दृष्टि से तो यह रचना बहुत ही सार्थक और सटीक हैं परन्तु संवाद इसके कहीं कहीं अधिक लम्बे हो गए है जो कथा की समरसता को अधिक भारी बनाते प्रतीत होते हैं. परन्तु अपने उद्देश्य और उपलब्धि की दृष्टि से निश्चित हीं इसमें अपने पाठकों को कुछ देने की सामर्थ्य है, इस कारण भी इसका स्वागत होना चाहिए. रचनाकार का मन अपने पात्रों के साथ पूरी निष्ठा के साथ जुड़ा हुआ हैं. जो रचनाकार के पात्रों की स्थिति हैं वही रचनाकार की भी हैं. श्री प्रमोद सक्सेना राजधानी, भोपाल के एक ऐसे चर्चित रचनाकार हैं जो चर्चा में भले ही पीछे हो परन्तु वे अपने सजनबोध में बहुत आगे हैं ठीक शत्रुघ्न की तरह. कारण उनकी सहजता और कलम की रचनाधर्मिता.

अंत में, मैं इतना और कहना चाहूंगा कि इस कृति को पाठक पढें और अवश्य पढ़ें. पुस्तक का कलेवर आकर्षक व प्राणत्व लिये हुए हैं.

समीक्ष्य पुस्तकः 'श्रुतिकीर्ति (दृश्य काव्य)
समीक्षकः हुकुमपाल सिंह 'विकल'
रचनाकारः श्री प्रमोद प्रकाश सक्सेना
मूल्यः ७०/- रुपये पृष्ठ- ८४
प्रकाशकः म.प्र. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, भोपाल ++++++++++++++++

सभी नव विधाओं का सुष्ठु प्रयोग चित्तकर्षक है

आज के नव शब्द चित्रकार एवं मनीषी श्रीयुत् मो. अंसार शिल्पी एक कुशल कलाकार एवं अंग्रजी तथा हिंदी के प्रेमी हैं. वे समय-समय पर अपने लेखों तथा कविताओं से जनमानस को तृप्त करते रहते हैं. प्रस्तुत काव्य संग्रह 'शब्द शिल्प' उनके प्रथम प्रयास की सफल प्रस्तुति हैं. इसमें इस नव कवि ने ३६ रचनाएं रखी हैं. इन रचनाओं में वैविध्य के साथ-साथ एक नवोन्वेष परिलक्षित होता हैं. सर्वप्रथम इस जागरुक कवि ने अपनी 'स्तुति' प्रस्तुत की हैं जो एक पारम्परिक परिपाटी का पालन मात्र है, यह उचित ही हैं. कवि ने लिखा है-

है तू अति कृपा निधान, दिया मुझे सम्मान।
प्रलय दिवस पर आपसे, मुक्ति की आस हैं।।

इसमें एक ओर तो कृतज्ञता ज्ञापन का भाव हैं और दूसरी ओर मुक्ति की कामना. 'ओ कविते' कविता में शब्द, रीति, छंद, अलंकार, तुकान्त, अतुकान्त आदि सभी का संकेत हैं. इसमें कुछ प्रमुख कवियों की अभ्यर्थना भी हैं. राष्ट्रभाषा हिन्दी पर भी कवि के विचार श्लाध्य हैं. नव वर्ष पर प्रस्तुत शुभकामना का अपना महत्व हैं. इसमें वार्षिक लेखे-जोखे की ओर भी संकेत हैं. 'बसंत बहार' में एक नई उमंग, एक नव उल्लास एवं नवल चिंतन हैं.

प्रस्तुत रचना संग्रह में शिल्पी ने विविध काव्यरुपों के माध्यम से विविध काव्य-शिल्प की सराहनीय योजना की है, जिसमें गजल, हाइकू, बालगीत आदि सभी नव विधाओं का सुष्ठु प्रयोग चित्तकर्षक है. नबी जयन्ती, उत्तम, सलाम तथा कर्बला प्रस्तुति से पता चलता है कि कवि को अपने इस्लाम मज़हब से अत्यधिक प्यार और मुहब्बत हैं.

समीक्ष्य पुस्तकः 'शब्द शिल्प'
समीक्षकःडॉ० मोहन अवस्थी
रचनाकारः मोहम्मद अंसार शिल्पी
मूल्यः २५/- रुपये
प्रकाशकः श्रीमती शहनाज़ बेगम,
प्राप्ति स्थलःशिल्प सदन, ६७, नेता नगर, मंझनपुर, कौशाम्बी, २१२२०७, उ.प्र. +++++++++

ग़ज़ल

कदम-कदम पर फिसलन, दुःख का कारण है।
सूखता जाता नंदन वन, दुःख का कारण है।
बात-बात में कानून में संशोधन क्या अच्छा हैं,
आदेश का नहीं होना सम्मान, दुःख का कारण है।
कभी ज्वार, कभी भाटा, संसार का नियम है।
ईर्ष्या-द्वेष का विष वमन, दुःख का कारण है।
अपनी फूंकी छोड़ दूसरे का ढेंढर निहारना चित्य हैं,
होजाना नैतिकता का पतन, दुःख का कारण है।
आये संकट से मुँह मोड़ना कैसे उचित है।
अनधिकारी का होना अभिनंदन दुःख का कारण है।
डॉ. स्वर्ण किरण, संपादक, सोहसराय, नालंदा

पारदर्शी-कवित्त

टीवी चाहे अखबार, विज्ञापन भरमार,
पेप्सी-कोका विष का ये, करते प्रचार है।
विदेशों को दे दी छूट, करो तुम खाली लूट,
पीओ जहर के घूँट, बिकता बाजार हैं
खुल गई सारी पोल, फूटा पेप्सी-कोका ढोल,
कीटनाशक दवा से, होता ये तैयार है।
बन्द करे सरकार, जहरीला ये व्यापार,
'पारदर्शी' कसम लें, करे बहिष्कार हैं.
संतकवि ऊँ 'पारदर्शी', उदयपुर

आधुनिकता की ओर

धरती मां इस मिट्टी को, गोमय का जब साथ मिले.
लाख गुणों के इस वसुधासे, लोहशक्ति के द्वार खिले।
अब धरती कई मंजिले, लाखों महल हुवे खड़े
सुविधा से परिपूर्ण घरों में, मिट्टी की छाया न पड़ें
टॉनिक गोलीसे लोह लिये, बच्चे होते आज बड़े
बिना साथ कुल दवा दारु से, रह ना पाते ठीक खड़े।
असर जादुसा अदरक में है, सर्दी खॉसी दूर करे
तुलसी पर अब नहीं भरोसा, साइनस ॲक्शन असर करें।
पेड़ो के उस स्वाद फलों के, बच्चों को मालूम कहॉ
रखे फ्रीजमें फ्रूटी जूस को, पिये शान से लोग यहॉ।
अंगारों पर बनी रोटियॉ, और मिले यह स्वाद कहॉ
बिजली गैस और कुकर के, आज आदि है लोग यहॉ।
बाग बगीचे पेड़ों की जादू, ठंडी हवा में मिलती है
पंखे, ए.सी. कुलर घरों में, हरदम हर पल चलते हैं
आधुनिकता के नये दौर में, आदि हो चुका अब मानव
निसर्ग के उस शक्तिस्त्रोत को, आज भुला है अब मानव।।
अशोक देशपाडें, जहीराबाद, आन्ध्र प्रदेश

ग़ज़ल

किया जिसने दिल में ही घर धीरे-धीरे।
उसी ने रूलाया मगर धीरे-धीरे।।
उमर मेरी गुजरी है यादों में जिनकी।
हुई आज उनको ख़बर धीरे-धीरे।।
बचपन में सरका जव़ानी में दौड़ां
बुढ़ापा गया अब ठहर धीरे-धीरे।।
न शिकवा किसी से न है अब शिकायत।
भरा घांव मेरा मगर धीरे-धीरे।।
जहॉ तक पहुँचने की ख्वाहिश है मेरी,
यक़ीनन मैं पहुँचूंगा पर धीरे-धीरे।।
बैजनाथ शर्मा 'मन्टू',सी.टी.एम. अहमदाबाद, गुजरात

ग़ज़ल

सावन कहेगा कौन जो बादल न आयेगा,
किस काम की घटा है अगर जल न आयेगा।
सब कुछ निहित है आज में सच्चाई है यहीं,
विश्वास कीजिये कि कभी कल न आयेगा।
जो मेरे आस-पास है चेहरे खिले रहें,
शायद मेरे नसीब में वो पल न आयेगा।
वरदान ज़िन्दगी है कि अभिशाप दोस्तों!
सर जोड़ के भी सोचें मगर हल न आयेगा।
'उम्मीद' के वृक्ष पे छाई हैं क्या बहार,
तुम कह रहे थे इस पे कभी फल न आयेगा।
डॉ० अली अब्बास 'उम्मीद', ईदगाह, भोपाल

छलनाएँ

कुछ आदत बाहर की
कुछ आदत भीतर की
छलती है रोज!
कौन धरेगा धीरज अंधकार-बीच
रह जाते मौन सभी आंखों को मीच
एक शरारत तन में,
एक शरारत मन में,
ढलती रोजं
मचल रहा काल-व्याल, उगलता जहर,
हर तनाव लाती है प्रलय-दोपहर
बंधन की ये कड़ियां,
विपदाओं की लड़िया,
पलती है रोज!
डॉ. भगीरथ बड़ोले, फ्रीगंज, उज्जैन, म.प्र.

करवाया.
सभी तरह के अनाज के बोरे लदवाए. कपड़े, बाल्टी, अगरबत्ती, धूप-दीप, घी, अक्षत और दो हजार रुपये लेकर मंदिर पहुँचा. संयोगवश आलम वहीं था. उसने मुझे देखते ही मेरे पैर छुए. उसे रोकते हुए मैंने कहा, 'आलम! तुम साधु बन चुके हो, मेरा पैर छूना अब ठीक नहीं. उसने कहा, 'आप मेरे पहले मालिक हो. मंदिर में जो बैठे है वो आपके बाद के मालिक है, इसलिए मुझे मना मत कीजिए.' पिताजी ने कहा, आलम! तुम यहॉ खुश हो, मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है. मगर ५० सालों तक तुमने मेरा कहना माना, कभी ना नहीं किया. आज एक आज्ञा और देता हूँ, इसे मेरी ममता समझकर मान लो; इनकार मत करो. जो कुछ लेकर आया हूँ. तुम पूजा, पाठ करो, मुझे कोई एतराज नहीं. मगर इस उम्र में भिक्षाटन पर मत जाया करो. मैं इसी तरह तुम्हारे अंतिम समय तक तुम्हारी जरुरत की चीजें लेकर आ जाया करुंगा. आलम रोने लगा. पिताजी भी ऑसू को समेटे हुए घर आ गए. लगभग दो सालों तक आलम जिंदा रहा. इस बीच, जब भी पिताजी उससे मिले, वह पूछता था, 'मालिक! तारा अब कितनी बड़ी हुई? क्या उसकी शादी के लिए लड़का ढूँढ रहे हो? उसे अच्छे घर में अच्छा वर देखकर शादी कर देना. तुमसे मेरी यही प्रार्थना है. वह मेरी बड़ी प्यारी है. उसकी याद दिल से जाती नहीं है. शायद, जायेगी भी नहीं.' आज पिताजी और आलम, दोनों में से कोई भी नहीं है, लेकिन उनकी यादें शायद मेरे दिल से कभी जुदा नहीं होगी. आज भी लगता है, पिताजी मेरे आगे बैठकर बीती कहॉनियों को बता रहे हैं. ईश्वर उन दोनों की आत्माओं को शांति दे!०

आलेखः डॉ. तारा

हम और हमारी हिन्दी

मुझे लिखते हुए दुख हो रहा है कि जिस हिन्दी भाषा के उत्थान एवं प्रचार के लिए केन्द्रीय सरकार की तरफ से बड़े-बड़े संस्थानों द्वारा करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये जा रहे है, वहीं हमारे राष्ट्रीय कार्यकर्ता हिन्दी अस्पृश्यता रोग से उतने ही ग्रस्त हैं. आज हमारे सरकारी आला नेता, सरकार और सरकारी कर्मचारी फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना अपनी शान समझते हैं. इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खद्दर पहनने लगे है, पर दिल में लेशमात्र भी हिन्दी के लिए जगह नहीं. किसी सभा/समिति की बैठक में चले जाइये. वहॉ तो ऐसे लगता है, जैसे वहॉ हिन्दुस्तान के लोगों की सभा नहीं बलिक अंग्रेजों की मीटिंग चल रही हो. हिन्दी भाषाई होने के बावजूद भी हिन्दी का एक लब्ज भी व्यवहार नहीं. जो जितना फर्राटेदार अंग्रेजी बोलेगा, अपने सम्मान को छोटा करना समझते हैं. अपने बच्चों को हिन्दी नहीं, अंग्रेजी का दर्जा मिले; हिन्दुस्तानी वेश-भूषा रहे मगर दिल इंग्लिस्तानी बना रहे. पता नहीं, ॲंग्रेजी भाषा का यह जादू कब तक हमारे सरों पर सवार रहेगा. कब तक हम अंग्रेजी के गुलाम बने रहेंगे. इससे साफ पता चलता है कि इन साठ सालों में भी हम राष्ट्रीयता की गहराई तक नहीं पहुँच सके हैं.
हमारे राष्ट्र निर्माता, महात्मा गॉधी को छोड़कर हमने किसी को हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर जोर देते नहीं सुना. जब कि यह सर्व विदित रहे, जब तक हम अपनी राष्ट्रभाषा को दिल से नहीं अपनायेंगे, तब तक भारत को एक सुदृढ़ राष्ट्र के रुप में निर्माण महज एक ख्वाब होगा. हमारे उन्नत राष्ट्र की कल्पना तभी साकार होगी, जब हम जापानियों की तरह जापानी, चीनियों की तरह चीनी अर्थात् अपने भावों को हिन्दी में प्रकट करेंगें. आप दुनिया के किसी भी उन्नतशील देश में जाकर देखिए. उनका देश इतना प्रगतिशील क्यो हैं? कारण साफ है. वे लोग अपने भावों को अपनी राष्ट्रीय भाषा में एक दूसरे से आदान-प्रदान करते है. न कि सामने वाला अंग्रेजी जाने न जाने, उसकी चिंता छोड़ हम फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते जा रहे है. हम सोचते है, अंग्रेजी के इन लब्जों को मेरे मुँह से सुनकर वे कुछ समझे ना समझे; मैं हिन्दुस्तानी कम अंग्रेज ज्यादा हूँ. ये तो समझ ही गए होगें. भला ऐसे में हमारे देश का उत्थान कैसे हो सकता है. आप ईरान जाइए, रुस जाइये, हर देश की अपनी भाषाएं अलग-अलग है और सभी अपनी भाषा से उतना ही प्यार करते है, जितना एक शिशु अपनी मॉ से.